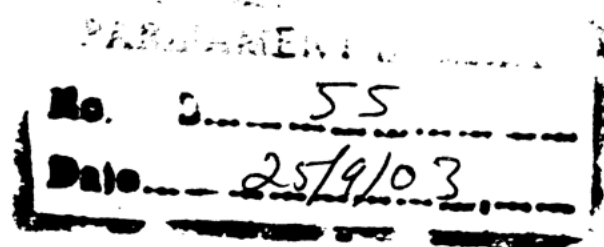


लोक सभा वाद - विवाद (हिन्दी संस्करण)

बारहवां सत्र
(तेरहवीं लोक सभा)



(खण्ड 31 में अंक 1 से 10 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : पचास रुपये

सम्पादक मण्डल

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

डा. (श्रीमती) परमजीत कौर सन्धु
संयुक्त सचिव

शारदा प्रसाद
प्रधान मुख्य सम्पादक

विद्या सागर शर्मा
मुख्य सम्पादक

वन्दना त्रिवेदी
वरिष्ठ सम्पादक

पीयूष चन्द्र दत्त
सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी।
उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।

विषय सूची

त्रयोदश माला, खंड 31, बारहवां सत्र, 2002/1924 (शक)

अंक 1, सोमवार, 17 फरवरी, 2003/28 माघ, 1924 (शक)

विषय	पृष्ठ
तेरहवीं लोक सभा के सदस्यों की अद्यतन वर्णानुक्रम सूची	iii-xxiv
लोक सभा के पदाधिकारी	xxv
मंत्रिपरिषद	xxvii-xxx
	कॉलम
राष्ट्रगान	1
राष्ट्रपति का अभिभाषण	1-25
मंत्रियों का परिचय	25-26
निधन संबंधी उल्लेख	26-28
सभा पटल पर रखे गए पत्र	28

तेरहवीं लोक सभा के सदस्यों की
अद्यतन वर्णानुक्रम सूची

अ

अजय कुमार, श्री एस. (ओट्टापलम)
अडसुल, श्री आनन्दराव विठोबा (बुलढाना)
अनंत कुमार, श्री (बंमलौर दक्षिण)
अब्दुल्ला, श्री उमर (श्रीनगर)
अब्दुल्लाकुट्टी, श्री ए. पी. (कन्नानौर)
अमीर आलम, श्री (कैराना)
अम्बरीश, श्री (माण्डया)
अम्बेडकर, श्री प्रकाश यशवंत (अकोला)
अय्यर, श्री मणि शंकर (मयिलादुतुरई)
अर्गल, श्री अशोक (मुरैना)
अलवी, श्री राशिद (अमरोहा)
अहमद, श्री ई. (मंजेरी)
अहमद, श्री दाऊद (शाहाबाद)

आ

आंग्ले, श्री रमाकांत (मारमागाओ)
आचार्य, श्री प्रसन्न (सम्बलपुर)
आचार्य, श्री बसुदेव (बांकुरा)
आजाद, श्री कीर्ति झा (दरभंगा)
आठवले, श्री रामदास (पंढरपुर)
आडवाणी, श्री लाल कृष्ण (गांधी नगर)
आदि शंकर, श्री (कुड्डालोर)
आदित्यनाथ, योगी (गोरखपुर)
आर्य, डा. (श्रीमती) अनिता (करोलबाग)
आल्वा, श्रीमती मार्ग्रेट (कनारा)

(iii)

इ

इन्दौरा, डा. सुशील कुमार (सिरसा)

ई

ईडन, श्री जार्ज (एर्णाकुलम)

उ

उमा भारती, कुमारी (भोपाल)

उराम, श्री जुएल (सुन्दरगढ़)

उस्मानी, श्री ए. एफ. गुलाम (बारपेटा)

ए

ए. नरेन्द्र, श्री (मेडक)

एटकिन्सन, श्री डेन्जिल बी, (नामनिर्दिष्ट)

एम. मास्टर मथान, श्री (नीलगिरि)

एलानगोवन, श्री पी. डी. (धर्मपुरी)

ओ

ओला, श्री शीश राम (झुंझुनूं)

ओवेसी, श्री सुल्तान सल्लाऊद्दीन (हैदराबाद)

क

कटारा, श्री बाबूभाई के. (दोहद)

कटारिया, श्री रतन लाल (अम्बाला)

कटियार, श्री विनय (फैजाबाद)

कथीरिया, डा. वल्लभभाई (राजकोट)

कन्नप्पन, श्री एम. (तिरुचेन्गोड़े)

कमलनाथ, श्री (छिन्दवाड़ा)

करुणाकरम्, श्री के. (मुकुन्दपुरम)

कलिअप्पन, श्री के. के. (गोबिचेट्टिपालयम)

कश्यप, श्री बली राम (बस्तर)

(iv)

कस्वां, श्री राम सिंह (चुरु)
कानूनगो, श्री त्रिलोचन (जगतसिंहपुर)
काम्बले, श्री शिवाजी विठ्ठलराव (उस्मानाबाद)
किन्डिया, श्री पी. आर. (शिलांग)
कुप्पुसामी, श्री सी. (मद्रास उत्तर)
कुमार, श्री अरुण (जहानाबाद)
कुमार, श्री वी. धनंजय (मंगलौर)
कुमारासामी, श्री पी. (पलानी)
कुरुप, श्री सुरेश (कोट्टायम)
कुलस्ते, श्री फग्गन सिंह (मण्डला)
कुसमरिया, डा. रामकृष्ण (दमोह)
कृपलानी, श्री श्रीचन्द (चित्तौड़गढ़)
कृष्णदास, श्री एन. एन. (पालघाट)
कृष्णन, डा. सी. (पोल्लाची)
कृष्णमराजू, श्री (नरसापुर)
कृष्णमूर्ति, श्री के. बलराम (ओंगोले)
कृष्णमूर्ति, श्री के. ई. (कुरनूल)
कृष्णास्वामी, श्री ए. (श्रीपेरुम्बुदुर)
कौर, श्रीमती प्रेनीत (पटियाला)
कौशल, श्री रघुवीर सिंह (कोटा)

ख

खंडेलवाल, श्री विजय कुमार (बेतूल)
खंडूडी, मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) भुवन चन्द्र (गढ़वाल)
खन्ना, श्री विनोद (गुरदासपुर)
खां, श्री अबुल हसनत (जंगीपुर)
खां, श्री मनसूर अली (सहारनपुर)

खां, श्री सुनील (दुर्गापुर)
खांदोकर, श्री अकबर अली (सेरमपुर)
खान, श्री हसन (लदाख)
खाबरी, श्री बृजलाल (जालौन)
खुराना, श्री मदन लाल (दिल्ली सदर)
खूटे, श्री पी. आर. (सारंगढ)
खैरे, श्री चन्द्रकांत (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

ग

गंगवार, श्री सन्तोष कुमार (बरेली)
गढ़वी, श्री पी. एस. (कच्छ)
गमांग, श्रीमती हेमा (कोरापुट)
गवली, कुमारी भावना पुंडलिकराव (वाशिम)
गांधी, श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल (अहमदनगर)
गांधी, श्रीमती मेनका (पीलीभीत)
गांधी, श्रीमती सोनिया (अमेठी)
गाड्डे, श्री राम मोहन (विजयवाड़ा)
गामलिन, श्री जारबोम (अरुणाचल पश्चिम)
गालिब, श्री जी. एस. (लुधियाना)
गावित, श्री माणिकराव होडल्या (नन्दुरबार)
गावीत, श्री रामदास रूपला (धुले)
गिलुवा, श्री लक्ष्मण (सिंहभूम)
गीते, श्री अनंत गंगाराम (रत्नागिरी)
गुढे, श्री अनंत (अमरावती)
गुप्त, प्रो. चमन लाल (उधमपुर)
गेहलोत, श्री थावरचन्द (शाजापुर)
गोगोई, श्री दीप (कलियाबोर)

गोयल, श्री विजय (चांदनी चौक)

गोविन्दन, श्री टी. (कासरगौड़)

गोहेन, श्री राजेन (नौगांव)

गौड़ा, श्री जी. पुट्टास्वामी (हसन)

गौतम, श्रीमती शीला (अलीगढ़)

घ

घाटोवार, श्री पवन सिंह (डिब्रुगढ़)

च

चक्रवर्ती, श्री अजय (बसीरहाट)

चक्रवर्ती, श्री स्वदेश (हावड़ा)

चक्रवर्ती, श्रीमती विजया (गुवाहाटी)

चटर्जी, श्री सोमनाथ (बोलपुर)

चतुर्वेदी, श्री सत्यव्रत (खजुराहो)

चन्देल, श्री अशोक कुमार सिंह (हमीरपुर, उत्तर प्रदेश)

चन्देल, श्री सुरेश (हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश)

चन्द्रशेखर, श्री (बलिया, उत्तर प्रदेश)

चिन्नासामी, श्री एम. (करूर)

चीखलीया, श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई (जूनागढ़)

चेन्निःताला, श्री रमेश (मवेलीकारा)

चौटाला, श्री अजय सिंह (भिवानी)

चौधरी, कर्नल (सेवानिवृत्त) सोना राम (बाड़मेर)

चौधरी, श्री अधीर (बरहामपुर, पश्चिमी बंगाल)

चौधरी, श्री ए. बी. ए. गनी खां (मालदा)

चौधरी, श्री निखिल कुमार (कटिहार)

चौधरी, श्री पदमसेन (बहराइच)

चौधरी, श्री मणिभाई रामजीभाई (बलसाड़)

चौधरी, श्री राम टहल (रांची)
चौधरी, श्री राम रघुनाथ (नागौर)
चौधरी, श्री विकास (आसनसोल)
चौधरी, श्री हरिभाई (बनासकांठा)
चौधरी, श्रीमती रीना (मोहनलालगंज)
चौधरी, श्रीमती रेणूका (खम्माम)
चौधरी, श्रीमती सन्तोष (फिल्लौर)
चौबे, श्री लाल मुनी (बक्सर)
चौहान, श्री नंदकुमार सिंह (खंडवा)
चौहान, श्री निहाल चन्द (श्रीगंगानगर)
चौहान, श्री बालकृष्ण (घोसी)
चौहान, श्री शिवराजसिंह (विदिशा)
चौहान, श्री श्रीराम (बस्ती)

ज

जगतरक्षकन, डा. एस. (अर्कोनम)
जगन्नाथ, डा. मन्दा (नगर कुरनूल)
जगमोहन, श्री (नई दिल्ली)
जटिया, डा. सत्यनारायण (उज्जैन)
जय प्रकाश, श्री (हरदोई)
जयशीलन, डा. ए. डी. के. (तिरुचेंदूर)
जाधव, श्री सुरेश रामराव (परभनी)
जाफर शरीफ, श्री सी. के. (बंगलौर उत्तर)
जायसवाल, डा. मदन प्रसाद (बेतिया)
जायसवाल, श्री जवाहर लाल (चन्दौली)
जायसवाल, श्री शंकर प्रसाद (वाराणसी)

जायसवाल, श्री श्रीप्रकाश (कानपुर)
जार्ज, श्री के. फ्रांसिस (इदुक्की)
जालप्पा, श्री आर. एल. (चिकबलपुर)
जावमा, श्री वनलाल (मिजोरम)
जावीया, श्री जी. जे. (पोरबंदर)
जाहेदी, श्री महबूब (कटवा)
जीगाजीनागी, श्री रमेश सी. (चिक्कोडी)
जैन, श्री पुष्प (पाली)
जोशी, डा. मुरली मनोहर (इलाहाबाद)
जोशी, श्री मनोहर (मुम्बई उत्तर मध्य)
जोस, श्री ए. सी. (त्रिचूर)

झ

झा, श्री रघुनाथ (गोपालगंज)

ठ

ठक्कर, श्रीमती जयाबहन बी. (वडोदरा)
ठाकुर, डा. सी. पी. (पटना)
ठाकुर, श्री चुन्नी लाल भाई (भंडारा)
ठाकुर, श्री रामशेठ (कुलाबा)
ठाकोर, श्री पुंजाजी सदाजी (मेहसाना)

ड

डिसूजा, डा. (श्रीमती) बीट्रिक्स (नामनिर्दिष्ट)
डूडी, श्री रामेश्वर (बीकानेर)
डोम, डा. राम चन्द्र (बीरभूम)

ढ

ढिकले, श्री उत्तमराव (नासिक)

त

तिरुनावुकरसर, श्री सु. (पुडुक्कोट्टई)
तिवारी, श्री लाल बिहारी (पूर्वी दिल्ली)
तिवारी, श्री सुन्दर लाल (रीवा)
तुड़, श्री तरलोचन सिंह (तरनतारन)
तोपदार, श्री तरित बरण (बैरकपुर)
तोमर, डा. रमेश चंद (हापुड़)
त्रिपाठी, श्री प्रकाश मणि (देवरिया)
त्रिपाठी, श्री ब्रजकिशोर (पुरी)
त्रिपाठी, श्री रामनरेश (सिवनी)

थ

थामस, श्री पी. सी. (मुवत्तुपुजा)

द

दग्गुबाटि, श्री राम नायडू (बापतला)
दत्त, श्री त्रिभुवन (अकबरपुर)
दत्तात्रेय, श्री बंडारू (सिकन्दराबाद)
दलित इजिलमलाई, श्री (तिरुचिरापल्ली)
दास, श्री खगेन (त्रिपुरा पश्चिम)
दास, श्री नेपाल चन्द्र (करीमगंज)
दासमुंशी, श्री प्रियरंजन (रायगंज)
दाहाल, श्री भीम (सिक्किम)
दिनाकरन, श्री टी. टी. वी. (पेरियाकुलम)
दिलेर, श्री किशन लाल (हाथरस)
दिवाथे, श्री नामदेव हरबाजी (चिमूर)
दीपक कुमार, श्री (उन्नाव)
दुराई, श्री एम. (वन्डावासी)

(x)

दूलो, श्री शमशेर सिंह (रोपड़)

देलकर, श्री मोहन एस. (दादरा और नगर हवेली)

देव, श्री बिक्रम केशरी (कालाहांडी)

देव, श्री संतोष मोहन (सिल्चर)

देवगौडा, श्री एच. डी. (कनकपुरा)

देवी, श्रीमती कैलाशो (कुरुक्षेत्र)

न

नरह, श्रीमती रानी (लखीमपुर)

नाईक, श्री राम (मुम्बई उत्तर)

नाईक, श्री श्रीपाद येसो (पणजी)

नागमणि, श्री (चतरा)

नायक, श्री अनन्त (क्योंझर)

नायक, श्री अली मोहम्मद (अनंतनाग)

नायक, श्री ए. वेंकटेश (रायचूर)

निषाद, कैप्टन जय नारायण प्रसाद (मुजफ्फरपुर)

नीतीश कुमार, श्री (बाढ़)

प

पटनायक, श्रीमती कुमुदिनी (आस्का)

पटवा, श्री सुन्दर लाल (होशंगाबाद)

पटेल, डा. अशोक (फतेहपुर)

पटेल, श्री चन्द्रेश (जामनगर)

पटेल, श्री ताराचंद शिवाजी (खरगौन)

पटेल, श्री दह्याभाई वल्लभभाई (दमण और दीव)

पटेल, श्री दिन्शा (कैरा)

पटेल, श्री दीपक (आनंद)

पटेल, श्री धर्म राज सिंह (फूलपुर)

पटेल, श्री प्रहलाद सिंह (बालाघाट)
पटेल, श्री मानसिंह (मांडवी)
पण्डा, श्री प्रबोध (मिदनापुर)
पद्मानाभम, श्री मुद्रागाड़ा (काकीनाड़ा)
परस्ते, श्री दलपत सिंह (शहडोल)
परांजपे, श्री प्रकाश (ठाणे)
पलानीमनिक्कम, श्री एस. एस. (तंजावूर)
पवार, श्री शरद (बारामती)
पवैया, श्री जयभान सिंह (ग्वालियर)
पांजा, डा. रंजीत कुमार (बारासाट)
पांजा, श्री अजित कुमार (कलकत्ता उत्तर पूर्व)
पांडियन, श्री पी. एच. (तिरुनेलवेली)
पाटसाणी, डा. प्रसन्न कुमार (भुवनेश्वर)
पाटिल, श्री अमरसिंह वसंतराव (बेलगाम)
पाटिल, श्री आर. एस. (बागलकोट)
पाटिल (यत्नाल), श्री बसनगौडा रामनगौड (बीजापुर)
पाटील, श्री अन्नासाहेब एम. के. (इरन्दोल)
पाटील, श्री उत्तमराव (यवतमाल)
पाटील, श्री जयसिंगराव गायकवाड (बीड)
पाटील, श्री दानवे रावसाहेब (जालना)
पाटील, श्री प्रकाश वी. (सांगली)
पाटील, श्री बालासाहिब विखे (कोपरगांव)
पाटील, श्री भास्करराव (नांदेड़)
पाटील, श्री लक्ष्मणराव (सतारा)
पाटील, श्री शिवराज वि. (लाटूर)
पाटील, श्री श्रीनिवास (कराड़)

पाठक, श्री हरिन (अहमदाबाद)
पाण्डेय, डा. लक्ष्मीनारायण (मंदसौर)
पाण्डेय, श्री रवीन्द्र कुमार (गिरिडीह)
पायलट, श्रीमती रमा (दौसा)
पार्थसारथी, श्री बी. के. (हिन्दुपुर)
पाल, डा. महेन्द्र सिंह (नैनीताल)
पाल, श्री रूपचन्द्र (हुगली)
पासवान, डा. संजय (नवादा)
पासवान, श्री राम विलास (हाजीपुर)
पासवान, श्री रामचन्द्र (रोसेड़ा)
पासवान, श्री सुकदेव (अररिया)
पासी, श्री राजनारायण (बांसगांव)
पासी, श्री सुरेश (चायल)
पुगलिया, श्री नरेश (चन्द्रपुर)
पोटाई, श्री सोहन (कांकेर)
पोन्नुस्वामी, श्री ई. (चिदंबरम)
प्रधान, डा. देवेन्द्र (देवगढ़)
प्रधान, श्री अशोक (खुर्जा)
प्रभु, श्री सुरेश (राजापुर)
प्रमाणिक, प्रो. आर. आर. (मथुरापुर)
प्रसाद, श्री वी. श्रीनिवास (चामराजनगर)
प्रेमाजम, प्रो. ए. के. (बडागरा)

फ

फर्नान्डीज, श्री जार्ज (नालन्दा)
फारूक, श्री एम. ओ. एच. (पांडिचेरी)

- बंगरप्पा, श्री एस. (शिमोगा)
बंद्योपाध्याय, श्री सुदीप (कलकत्ता उत्तर पश्चिम)
बंसल, श्री पवन कुमार (चंडीगढ़)
बखला, श्री जोवाकिम (अलीपुरद्वारस)
बघेल, प्रो. एस. पी. सिंह (जलेसर)
'बचदा', श्री बची सिंह रावत (अल्मोड़ा)
बदनोर, श्री विजयेन्द्र पाल सिंह (भीलवाड़ा)
बनर्जी, कुमारी ममता (कलकत्ता दक्षिण)
बनातवाला, श्री जी. एम. (पोन्नानी)
बब्बन राजभर, श्री (सलेमपुर)
बब्बर, श्री राज (आगरा)
बरवाला, श्री सुरेन्द्र सिंह (हिसार)
बराड़, श्री जे. एस. (फरीदकोट)
बर्मन, श्री रनेन (बलूरघाट)
बलिराम, डा. (लालगंज)
बसवनागौड, श्री कोलूर (बेल्लारी)
बसवराज, श्री जो. एस. (तुमकुर)
बसु, श्री अनिल (आरामबाग)
बालू, श्री टी. आर. (मद्रास दक्षिण)
बिन्द, श्री रामरती (मिर्जापुर)
बिश्नोई, श्री जसवंत सिंह (जोधपुर)
बुन्देला, श्री सुजानसिंह (झांसी)
बेगम नूर बानो (रामपुर)
बेहरा, श्री पद्मनाव (फूलबनी)
बैंदा, श्री रामचन्द्र (फरीदाबाद)

बैठा, श्री महेन्द्र (बगहा)
बैनर्जी, श्रीमती जयश्री (जबलपुर)
बैस, श्री रमेश (रायपुर)
बैसीमुथियारी, श्री सानछुमा खुंगुर (कोकराझार)
बोचा, श्री सत्यनारायण (बोब्बिली)
बोस, श्रीमती कृष्णा (जादवपुर)
बौरी, श्रीमती संध्या (विष्णुपुर)
ब्रह्मनैया, श्री ए. (मछलीपटनम)

भ

भगत, प्रो. दुखा (लोहरदगा)
भगोरा, श्री ताराचन्द्र (बांसवाड़ा)
भडाना, श्री अवतार सिंह (मेरठ)
भट्टिया, श्री आर. एल. (अमृतसर)
भार्गव, श्री गिरधारी लाल (जयपुर)
भूरिया, श्री कांतिलाल (झाबुआ)
भौरा, श्री भान सिंह (भटिंडा)

म

मंजय लाल, श्री (समस्तीपुर)
मंडल, श्री ब्रह्मानन्द (मुंगेर)
मंडल, श्री सनत कुमार (जयनगर)
मंडलिक, श्री सदाशिवराव दादोबा (कोल्हापुर)
मकवाना, श्री सवशीभाई (सुरेन्द्रनगर)
मलयसामी, श्री के. (रामनाथपुरम)
मलिक, श्री जगन्नाथ (जाजपुर)
मल्याला, श्री राजैया (सिद्दीपेट)
मल्लिकार्जुनप्पा, श्री जी. (दावणगेरे)

(xv)

मल्होत्रा, डा. विजय कुमार, (दक्षिण दिल्ली)
महंत, डा. चरणदास (जांजगीर)
महताब, श्री भर्तृहरि (कटक)
महतो, श्री बीर सिंह (पुरुलिया)
महतो, श्रीमती आभा (जमशेदपुर)
महरिया, श्री सुभाष (सीकर)
महाजन, श्री वाई. जी. (जलगांव)
महाजन, श्रीमती सुमित्रा (इन्दौर)
महाले, श्री हरीभाऊ शंकर (मालेगांव)
मांझी, श्री रामजी (गया)
मांझी, श्री परसुराम (नवरंगपुर)
मान, श्री जोरा सिंह (फिरोजपुर)
मान, सरदार सिमरनजीत सिंह (संगरूर)
माने, श्री शिवाजी (हिंगोली)
माने, श्रीमती निवेदिता (इचलकरांजी)
मारन, श्री मुरासोली (मद्रास मध्य)
मिश्र, श्री राम नगीना (पडरौना)
मिश्र, श्री श्याम बिहारी (बिल्हौर)
मिस्त्री, श्री मधुसूदन (साबरकांठा)
मीणा, श्री भेरूलाल (सलूमबर)
मीणा, श्रीमती जस कौर (सवाई माधोपुर)
मुखर्जी, श्री सत्यव्रत (कृषनगर)
मुण्डा, श्री कड़िया (खूंटी)
मुत्तेमवार, श्री विलास (नागपुर)
मुनि लाल, श्री (सासाराम)
मुनियप्पा, श्री के. एच. (कोलार)

मुरलीधरन, श्री के. (कालीकट)
मुरुगेसन, श्री एस. (तेनकासी)
मुर्मू, श्री रूपचन्द्र (झाड़ग्राम)
मुर्मू, श्री सालखन (मयूरभंज)
मूर्ति, श्री ए. के. (चेंगलपट्ट)
मूर्ति, डा. एम. वी. वी. एस. (विशाखापत्तनम)
मेघवाल, श्री कैलाश (टोंक)
महेता, श्रीमती जयवंती (मुम्बई दक्षिण)
मोल्लाह, श्री हन्नान (उलूबेरिया)
मोहन, श्री पी. (मदुरै)
मोहले, श्री पुन्नू लाल (बिलासपुर)
मोहिते, श्री सुबोध (रामटेक)
मोहोल, श्री अशोक ना. (खेड़)

य

यादव, श्री अखिलेश (कन्नौज)
यादव, डा. (श्रीमती) सुधा (महेन्द्रगढ़)
यादव, डा. जसवंतसिंह (अलवर)
यादव, श्री दिनेश चन्द्र (सहरसा)
यादव, श्री देवेन्द्र प्रसाद (झंझारपुर)
यादव, श्री देवेन्द्र सिंह (एटा)
यादव, श्री प्रदीप (गोड्डा)
यादव, श्री बलराम सिंह (मैनपुरी)
यादव, श्री भालचन्द्र (खलीलाबाद)
यादव, श्री मुलायम सिंह (सम्भल)
यादव, श्री रमाकान्त (आजमगढ़)
यादव, श्री शरद (मधेपुरा)
यादव, श्री हुक्मदेव नारायण (मधुबनी)
येरननायडू, श्री के. (श्रीकाकुलम)

रंगपी, डा. जयन्त (स्वशासी जिला असम)

रमैया, डा. बी. बी. (एलूरु)

रवि, श्री शीशराम सिंह (बिजनौर)

राजवंशी, श्री माधव (मंगलदोई)

राजा, श्री ए. (पैरम्बलूर)

राजूखेड़ी, श्री गजेन्द्र सिंह (धार)

राजे, श्रीमती वसुन्धरा (झालावाड़)

राजेन्द्रन, श्री पी. (क्विलोन)

राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव, श्री (पूर्णिया)

राठवा, श्री रामसिंह (छोटा उदयपुर)

राणा, श्री काशीराम (सूरत)

राणा, श्री राजू (भावनगर)

राधाकृष्णन, श्री पोन (नागरकोइल)

राधाकृष्णन, श्री वरकला (चिरायिकिल)

राधाकृष्णन, श्री सी. पी. (कोयम्बटूर)

राम सजीवन, श्री (बांदा)

राम, श्री ब्रजमोहन (पलामू)

रामचन्द्रन, श्री जिन्जी एन. (टिडिवनाम)

रामशकल, श्री (राबर्टसगंज)

रामुलू, श्री एच. जी. (कोप्पल)

रामैया, श्री गुनीपाटी (राजमपेट)

राय, श्री नवल किशोर (सीतामढ़ी)

राय, श्री विष्णु पद (अंदमान और निकोबार द्वीप)

राय, श्री सुबोध (भागलपुर)

राय प्रधान, श्री अमर (कूचबिहार)

राव, श्री एस. बी. पी. बी. के. सत्यनारायण (राजामुन्दरी)

राव, श्री गंता श्रीनिवास (अनकापल्ली)

राव, डा. डी. वी. जी. शंकर (पार्वतीपुरम)

राव, श्री वाई. वी. (गुंटूर)

राव, श्री सीएच. विद्यासागर (करीमनगर)

राव, श्रीमती प्रभा (वर्धा)

रावत, प्रो. रासासिंह (अजमेर)

रावत, श्री प्रदीप (पुणे)

रावत, श्री रामसागर (बाराबंकी)

रावले, श्री मोहन (मुम्बई दक्षिण मध्य)

राष्ट्रपाल, श्री प्रवीण (पाटन)

रिजवान जहीर, श्री (बलरामपुर)

रियान, श्री बाजू बन (त्रिपुरा पूर्व)

रूडी, श्री राजीव प्रताप (छपरा)

रेड्डी, श्री ए. पी. जितेन्द्र (महबूबनगर)

रेड्डी, श्री एन. जनार्दन (नरसारावपेट)

रेड्डी, श्री एन. आर. के. (चित्तूर)

रेड्डी, श्री एस. जयपाल (मिरयालगुडा)

रेड्डी, श्री गुथा सुकेन्दर (नालगोंडा)

रेड्डी, श्री चाडा सुरेश (हनमकोण्डा)

रेड्डी, श्री जी. गंगा (निजामाबाद)

रेड्डी, श्री बी. वी. एन. (नांदयाल)

रेड्डी, श्री वाई. एस. विवेकानन्द (कुडप्पा)

रेनु कुमारी, श्रीमती (खगड़िया)

ल

लाहिडी, श्री समीक (डायमंड हार्बर)

लेपचा, श्री एस. पी. (दार्जिलिंग)

(xix)

व

- वंग्या, श्री राजकुमार (अरुणाचल पूर्व)
वनगा, श्री चिंतामन (दहानू)
वर्मा, डा. साहिब सिंह (बाहरी दिल्ली)
वर्मा, प्रो. रीता (धनबाद)
वर्मा, श्री बेनी प्रसाद (कैसरगंज)
वर्मा, श्री रतिलाल कालीदास (धन्धुका)
वर्मा, श्री रवि प्रकाश (खीरी)
वर्मा, श्री राममूर्ती सिंह (शाहजहांपुर)
वर्मा, श्री राजेश (सीतापुर)
वसावा, श्री मनसुखभाई डी. (भरुच)
वाघेला, श्री शंकर सिंह (कपड़वंज)
वाजपेयी, श्री अटल बिहारी (लखनऊ)
वाडियार, श्री एस. डी. एन. आर. (मैसूर)
विजयन, श्री ए. के. एस. (नागापट्टिनम)
विजया कुमारी, श्रीमती जी. (अमालापुरम)
विजया कुमारी, श्रीमती डी. एम. (भद्राचलम)
वीरप्पा, श्री रामचन्द्र (बीदर)
वीरेन्द्र कुमार, श्री (सागर)
वुक्कला, डा. राजेश्वरम्मा (नेल्लौर)
वेंकटस्वामी, डा. एन. (तिरुपति)
वेंकटेश्वरलु, प्रो. उम्मारैड्डी (तेनाली)
वेंकटेश्वरलु, श्री बी. (वारंगल)
वेणुगोपाल, डा. एस. (आदिलाबाद)
वेणुगोपाल, श्री डी. (तिरुपत्तूर)
वेत्रिसेलवन, श्री वी. (कृष्णागिरि)

वैको, श्री (शिवकाशी)

व्यास, डा. गिरिजा (उदयपुर)

श

शर्मा, कैप्टन सतीश (रायबरेली)

शशि कुमार, श्री (चित्रदुर्ग)

शहाबुद्दीन, मोहम्मद (सिवान)

शांडिल्य, कर्नल (सेवानिवृत्त) डा. धनी राम (शिमला)

शाक्य, श्री रघुराज सिंह (इटावा)

शान्ता कुमार, श्री (कांगड़ा)

शाह, श्री मानवेन्द्र (टिहरी गढ़वाल)

शाहीन, श्री अब्दुल रशीद (बारामूला)

शिंदे, श्री सुशील कुमार (शोलापुर)

शिवकुमार, श्री वी. एस. (तिरुअनन्तपुरम)

शुक्ल, श्री श्यामाचरण (महासमुन्द)

शेरवानी, श्री सलीम आई. (बदायूं)

श्रीकांतप्पा, श्री डी. सी. (चिकमंगलूर)

श्रीनिवासन, श्री सी. (डिंडीगुल)

श्रीनिवासुलु, श्री कालवा (अनन्तपुर)

ष

षण्मुगम, श्री एन. टी. (वेल्लौर)

स

संकेश्वर, श्री विजय (धारवाड़ उत्तर)

संखवार, श्री प्यारे लाल (घाटमपुर)

संगमा, श्री पूर्णो ए. (तुरा)

संघाणी, श्री दिलीप (अमरेली)

सईद, श्री पी. एम. (लक्षद्वीप)

सईदुज्जमा, श्री (मुजफ्फरनगर)
सनदी, प्रो. आई. जी. (धारवाड़ दक्षिण)
सर, श्री निखिलानन्द (बर्दवान)
सरकार, डा. बिक्रम (पंसकुरा)
सरडगी, श्री इकबाल अहमद (गुलबर्गा)
सरोज, श्री तूफानी (सैदपुर)
सरोज, श्रीमती सुशीला (मिसरिख)
सरोजा, डा. वी. (रासीपुरम)
सांगतम, श्री के. ए. (नागालैंड)
सांगवान, श्री किशन सिंह (सोनीपत)
साथी, श्री हरपाल सिंह (हरिद्वार)
सामन्तराय, श्री प्रभात (केन्द्रपाडा)
साय, श्री विष्णुदेव (रायगढ़)
साहू, श्री अनादि (बरहामपुर, उड़ीसा)
साहू, श्री ताराचन्द्र (दुर्ग)
सिंधिया, श्री ज्योतिरादित्य मा. (गुना)
सिंह, कुंवर अखिलेश (महाराजगंज, उत्तर प्रदेश)
सिंह, कुंवर सर्वराज (आंवला)
सिंह, कैप्टन (सेवानिवृत्त) इन्द्र (रोहतक)
सिंह, चौधरी तेजवीर (मथुरा)
सिंह, डा. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली)
सिंह, डा. रमण (राजनंदगांव)
सिंह, डा. रामलखन (भिण्ड)
सिंह, श्री अजित (बागपत)
सिंह, श्री खेलसाय (सरगुजा)
सिंह, श्री चन्द्र प्रताप (सिधी)
सिंह, श्री चन्द्र भूषण (फरुखाबाद)
सिंह, श्री चन्द्र विजय (मुरादाबाद)
सिंह, श्री चन्द्रनाथ (मछलीशहर)

सिंह, श्री चरनजीत (होशियारपुर)
सिंह, श्री छत्रपाल (बुलन्दशहर)
सिंह, श्री जयभद्र (सुल्तानपुर)
सिंह, श्री तिलकधारी प्रसाद (कोडरमा)
सिंह, श्री टीएच. चाओबा (आंतरिक मणिपुर)
सिंह, श्री दिग्विजय (बांका)
सिंह, श्री प्रभुनाथ (महाराजगंज, बिहार)
सिंह, श्री बलबीर (जालन्धर)
सिंह, श्री बहादुर (बयाना)
सिंह, श्री बृज भूषण शरण (गोंडा)
सिंह, श्री महेश्वर (मंडी)
सिंह, श्री राजो (बेगुसराय)
सिंह, श्री राधा मोहन (मोतिहारी)
सिंह, श्री राम प्रसाद (आरा)
सिंह, श्री रामजीवन (बलिया, बिहार)
सिंह, श्री रामपाल (डुमरियागंज)
सिंह, श्री रामानन्द (सतना)
सिंह, श्री लक्ष्मण (राजगढ़)
सिंह, श्री विश्वेन्द्र (भरतपुर)
सिंह, श्रीमती कान्ति (बिक्रमगंज)
सिंह श्रीमती राजकुमारी रत्ना (प्रतापगढ़)
सिंह, श्रीमती श्यामा (औरंगाबाद, बिहार)
सिंह, सरदार बूटा (जालौर)
सिंह देव, श्री के. पी. (ढेंकानाल)
सिंह देव, श्रीमती संगीता कुमारी (बोलनगीर)
सिकदर, श्री तपन (दमदम)
सिन्हा, श्री मनोज (गाजीपुर)
सिन्हा, श्री यशवन्त (हजारीबाग)
सी. सुगुणा कुमारी, डा. (श्रीमती) (पेदापल्ली)

सुदर्शन नाच्चीयपन, श्री ई. एम. (शिवगंगा)
सुधीरन, श्री वी. एम. (अलेप्पी)
सुनील दत्त, श्री (मुम्बई उत्तर पश्चिम)
सुब्बा, श्री एम. के. (तेजपुर)
सुमन, श्री रामजीलाल (फिरोजाबाद)
सुरेश, श्री कोडीकुनील (अडूर)
सेठ, श्री लक्ष्मण (तामलुक)
सेठी, श्री अर्जुन चरण (भद्रक)
सेन, श्रीमती मिनाती (जलपाईगुड़ी)
सेनगुप्ता, डा. नीतिश (कोन्टाई)
सेल्वागनपति, श्री टी. एम. (सेलम)
सोमैया, श्री किरीट (मुम्बई उत्तर पूर्व)
सोराके, श्री विनय कुमार (उदुपी)
सोरेन, श्री शिबु (दुमका)
सोलंकी, श्री भूपेन्द्रसिंह (गोधरा)
स्वाइं, श्री खारबेल (बालासोर)
स्वामी, श्री ईश्वर दयाल (करनाल)
स्वामी, श्री चिन्मयानन्द (जौनपुर)

ह

हंसदा, श्री थामस (राजमहल)
हक, मोहम्मद अनवारूल (शिवहर)
हमीद, श्री अब्दुल (धूबरी)
हसन, श्री मोइनुल (मुर्शिदाबाद)
हान्दिक, श्री विजय (जोरहाट)
हुसैन, चौ. तालिब (जम्मू)
हुसैन, श्री सैयद शाहनवाज (किशनगंज)
हौकिप, श्री होलखोमांग (बाह्य मणिपुर)

लोक सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष

श्री मनोहर जोशी

उपाध्यक्ष

श्री पी. एम. सईद

सभापति तालिका

श्री बसुदेव आचार्य

श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा

डा. लक्ष्मीनारायण पाण्डे

श्री पी. एच. पांडियन

श्री श्रीनिवास पाटील

डा. रघुवंश प्रसाद सिंह

श्री बेनी प्रसाद वर्मा

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव

श्री के. येरननायडू

महासचिव

श्री गुरदीप चन्द मलहोत्रा

भारत सरकार

मंत्रिपरिषद

मंत्रिमंडल स्तर के मंत्री

श्री अटल बिहारी वाजपेयी	प्रधानमंत्री तथा ऐसे मंत्रालयों/विभागों के प्रभारी जिनका प्रभार विशिष्ट तौर पर किसी अन्य मंत्री को आवंटित नहीं किया गया है अर्थात :
	(1) योजना मंत्रालय
	(2) सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
	(3) परमाणु ऊर्जा विभाग
	(4) अंतरिक्ष विभाग
श्री लाल कृष्ण आडवाणी	उप प्रधानमंत्री तथा गृह मंत्रालय तथा कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के प्रभारी
श्री अनन्त कुमार	शहरी विकास और गरीबी उपशमन मंत्री
श्री टी. आर. बालू	पर्यावरण और वन मंत्री
श्री सुखदेव सिंह ढिंडसा	रसायन और उर्वरक मंत्री
श्री जार्ज फर्नान्डीज	रक्षा मंत्री
श्री अनन्त गंगाराम गीते	विद्युत मंत्री
श्री सैयद शाहनवाज हुसैन	नागर विमानन मंत्री
श्री जगमोहन	पर्यटन और संस्कृति मंत्री
श्री अरुण जेटली	विधि और न्याय मंत्री तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्री
डा. सत्यनारायण जटिया	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
डा. मुरली मनोहर जोशी	मानव संसाधन विकास मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा महासागर विकास मंत्री
श्री मुरासोली मारन	निर्विभाग मंत्री
श्री कड़िया मुण्डा	कोयला मंत्री
श्री राम नाईक	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री
श्री नीतीश कुमार	रेल मंत्री
श्री जुएल उराम	जनजातीय कार्य मंत्री

श्री बालासाहिब विखे पाटील	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री
श्री काशीराम राणा	वस्त्र मंत्री
श्री अर्जुनचरण सेठी	जल संसाधन मंत्री
श्री शांता कुमार	ग्रामीण विकास मंत्री
श्री अरूण शौरी	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री तथा विनिवेश मंत्री
श्री अजित सिंह	कृषि मंत्री
श्री जसवंत सिंह	वित्त और कम्पनी कार्य मंत्री
श्री शत्रुघ्न सिन्हा	पोत परिवहन मंत्री
श्री यशवंत सिन्हा	विदेश मंत्री
श्रीमती सुषमा स्वराज	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री
डा. सी. पी. ठाकुर	लघु उद्योग मंत्री तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास विभाग मंत्री
डा. साहिब सिंह वर्मा	श्रम मंत्री
श्री विक्रम वर्मा	युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री
श्री शरद यादव	उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

श्री रमेश बैस	खान मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री संघप्रिय गौतम	कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री एम. कन्नप्पन	अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री
मेजर जनरल (सेवानिवृत्त)	सड़क परिवहन और राजमार्ग
भुवन चन्द्र खंडूड़ी	मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री रवि शंकर प्रसाद	सूचना और प्रसारण मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री एन. टी. षण्मुगम	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री ब्रज किशोर त्रिपाठी	इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री

राज्य मंत्री

श्री आनन्दराव विठोबा अडसुल	वित्त और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती विजया चक्रवर्ती	जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई चीखलीया	संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री बंडारू दत्तात्रेय	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गांधी	पोत परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री संतोष कुमार गंगवार	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री विजय गोयल	संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा श्रम मंत्रालय में राज्य मंत्री
प्रो. चमन लाल गुप्त	रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री दिलीप सिंह जूदेव	पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. वल्लभभाई कथीरिया	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री विनोद खन्ना	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री कृष्णमराजू	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री फग्गन सिंह कुलस्ते	जनजातीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती सुमित्रा महाजन	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सुभाष महरिया	उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती जस कौर मीणा	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती जयवंती महेता	विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सत्यव्रत मुखर्जी	योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री
श्री ए. के. मूर्ति	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री श्रीपाद येसो नाईक	नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. संजय पासवान	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री हरिन पाठक	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री अन्नासाहेब एम. के. पाटील	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री बसनगौडा रामनगौड पाटिल (यत्नाल)	वस्त्र मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्री अशोक प्रधान	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री पोन राधाकृष्णन	शहरी विकास और गरीबी उपशमन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ए. राजा	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ओ. राजगोपाल	रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री जिन्जी एन. रामचन्द्रन	वित्त और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सीएच. विद्यासागर राव	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री बची सिंह रावत "बचदा"	विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग में राज्य मंत्री
श्री राजीव प्रताप रूडी	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री तपन सिकंदर	लघु उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उत्तरपूर्वी क्षेत्र विकास विभाग में राज्य मंत्री
श्री छत्रपाल सिंह	रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री दिग्विजय सिंह	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री वी. श्रीनिवास प्रसाद	उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ईश्वर दयाल स्वामी	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सु. तिरुनावुकरसर	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री हुक्मदेव नारायण यादव	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री

लोक सभा

सोमवार, 17 फरवरी, 2003/28 माघ, 1924 (शक)

लोक सभा अपराह्न एक बजकर पचपन मिनट पर समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

राष्ट्रगान

(राष्ट्रगान की धुन बजाई गई)

अपराह्न 1.57 बजे

[अनुवाद]

राष्ट्रपति का अभिभाषण*

महासचिव : महोदय, मैं 17 फरवरी, 2003 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष राष्ट्रपति के अभिभाषण** की प्रति सभा पटल पर रखता हूँ।

राष्ट्रपति का अभिभाषण*

महोदय,

मैं, वर्ष 2003 में, संसद के इस प्रथम सत्र में आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। बजट सत्र आरंभ होने के अवसर पर संसद के समक्ष यह मेरा पहला संबोधन है।

पहले, मैं राज्य सभा के और साथ ही लोक सभा के नव निर्वाचित सदस्यों का स्वागत करता हूँ। मैं जम्मू-कश्मीर के लोगों को बधाई देता हूँ जिन्होंने अक्टूबर में हुए विधान - सभा चुनावों में गोली के खतरे का जवाब मत की ताकत से दिया। पूरा राष्ट्र अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में भी समर्पित सेवा करने वाली मारी सशस्त्र सेनाओं, अर्ध सैनिक बलों और पुलिस बलों का आभारी है। हम उन सभी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जो अपने कर्तव्य का पालन करते हुए शहीद हो गए।

राष्ट्रपति ने अभिभाषण अंग्रेजी में दिया।

* ग्रंथालय में भी रखा गया, देखिए संख्या एल. टी. 6958/2003

† अभिभाषण का हिन्दी पाठ भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा पढ़ा गया।

मैं चाहूंगा कि आज हम सब मिलकर कल्पना चावला और उनके छः साथी अंतरिक्ष-यात्रियों को श्रद्धांजलि अर्पित करें, जिनका निधन 1 फरवरी को अंतरिक्ष-यान कोलम्बिया के धरती पर उतरने के कुछ मिनट पूर्व उसमें हुए दुःखद विस्फोट के कारण हुआ। हरियाणा के एक छोटे से कस्बे की इस भारतीय महिला के साहस और दृढ़ निश्चय से भरी जीवन यात्रा, जिसने उसे आकाश गंगा का नागरिक बना दिया, भारतवासियों और भारतवंशियों के लिए गर्व की बात रहेगी। इससे भारतीय युवाओं, खासकर महिलाओं को सपने देखने और अपने सपनों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। मेटसैट सीरिज के उपग्रहों का नाम कल्पना चावला के नाम पर रखने के भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) के कदम का मैं स्वागत करता हूँ।

राष्ट्रीय विकास परिषद द्वारा दसवीं पंचवर्षीय योजना अपनाए जाने के पश्चात, संसद का यह प्रथम सत्र है। इस योजना का उद्देश्य, रोजगार-सृजन और इक्विटी पर अधिक जोर देते हुए, त्वरित आर्थिक विकास करना है। इस योजना-अवधि के दौरान इसमें सकल घरेलू उत्पाद में औसत 8 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ-साथ, 5 करोड़ अतिरिक्त रोजगार और स्वरोजगार अवसर सृजन का भी लक्ष्य रखा गया है। योजना में पूर्णतः स्पष्ट किया गया है कि ये महत्वाकांक्षी लक्ष्य क्यों प्राप्त किए जाने चाहिए। दसवीं योजना पूर्ववर्ती योजनाओं से, इस दृष्टि से अलग है कि यह संसाधन योजना ही नहीं, वरन् सुधार योजना भी है। राज्य सरकारों को सुधार संबंधी प्रोत्साहन देकर, इसमें खासतौर पर आर्थिक सुधार के क्षेत्र को बढ़ाया गया है। सिविल सेवा, न्यायपालिका, शिक्षा और इन सबसे ऊपर, केन्द्र, राज्य और पंचायती राज संस्थाओं - सभी स्तरों पर शासन में सुधार के माध्यम से त्वरित विकास में आने वाली अनेक गैर-वित्तीय बाधाओं को दूर करने की स्पष्ट अनिवार्यता परिलक्षित की गई है। ताकि इसमें सुधारों के एजेंडा को व्यापक बनाया जाए। मैं संघ और राज्य सरकारों का ध्यान इस योजना दस्तावेज में दी गई उस विस्तृत सूची की ओर दिलाना चाहूंगा, जिसमें 10 वीं योजना के लक्ष्यों व उद्देश्यों को मूर्त रूप देने के लिए आवश्यक विधायी एवं प्रशासकीय उपाय दिए गए हैं।

दसवीं योजना एक और कारण से भी महत्वपूर्ण है। कोई भी राष्ट्र तब तक महान नहीं बन सकता, जब तक कि वह एक ऊर्जावित्त संकल्पना के मार्गदर्शन से अपनी क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग नहीं करता। प्रधानमंत्री ने, पिछले वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अपने अभिभाषण में 2020 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में

तब्दील करने के लक्ष्य की तरफ अग्रसर होने के लिए जनता का आह्वान किया था। इस संकल्पना में जनता का आत्मविश्वास परिलक्षित होता है, जिसका मूल अनेक क्षेत्रों में भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में निहित है। साथ ही, इसमें नई सदी के आरम्भ में हमारी जनता की अपेक्षाएं भी परिलक्षित होती हैं कि भारत को अब गरीब देशों की श्रेणी में गिनने की बात तो दूर बल्कि हमें विकासशील राष्ट्रों की श्रेणी से भी ऊपर उठना है। गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे लगभग 260 मिलियन लोग विकास की मुख्यधारा में शामिल होना चाहते हैं। हमारी जनता शत-प्रतिशत साक्षरता, सभी के लिए स्वास्थ्य, सभी के लिए मकान, ज्ञान-आधारित उत्पादन-क्षमता से समृद्धि तथा रहन-सहन का बेहतर स्तर पाने के लिए उत्कण्ठित है— और यह सब हमारे नैतिक मूल्यों से जुड़ा होना चाहिए। अतः भारत ने एक नई संकल्पना तैयार की है, जिसे मैं 'संकल्पना-2020' कहूंगा। मैं चाहूंगा कि हमारी संसद, जो अपनी स्वर्ण जयंती मना रही है, वह इस विषय पर विचार-विमर्श करे। मैं संघ व राज्य सरकारों से भी आग्रह करूंगा कि वे दसवीं योजना को लोकपरक योजना और विकास को जन-आंदोलन बनाने के लिए एक कार्य-योजना बनाएं। इसे प्राप्त करने के लिए उन्हें दो मंत्रों पर ध्यान देना चाहिए—जनता की भागीदारी के साथ प्रभावी क्रियान्वयन और जनता की भागीदारी के लिए प्रभावी संपर्क।

संकल्पना 2020 की एक मुख्य विशेषता है — 'ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं उपलब्ध कराना'। भारत की दो-तिहाई से अधिक जनता ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। हमें उनके सशक्तिकरण हेतु एक वृहद मिशन के जरिए उनके सर्वांगीण विकास पर नए सिरे से बल देने की आवश्यकता है। चार महत्वपूर्ण संयोजनों की व्यवस्था करके यह बहुत अच्छी तरह प्राप्त की जा सकती है। ये हैं—अच्छी सड़कें और परिवहन सुविधाएं, गुणवत्तायुक्त ऊर्जा मुहैया कराकर भौतिक संयोजन; विश्वसनीय संचार तंत्र मुहैया कराकर इलेक्ट्रॉनिक संयोजन; और अधिक व्यावसायिक संस्थाएं एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, उच्च गुणवत्ता की अवसंरचना वाले विद्यालय, अध्यापन के प्रति समर्पित अध्यापक, ग्रामीण दस्तकारों के लिए उत्पादन केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मनोरंजन केन्द्र, आदि की स्थापना करके ज्ञान संबंधी संयोजन; और मार्केट संयोजन जिससे ग्रामीण जनता के उत्पादों व सेवाओं के लिए उचित मूल्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी और उनके लिए रोजगार अवसरों में लगातार बढ़ोत्तरी होगी। यह परिकल्पित नमूना सर्वांगीण पर्यावास के रूप में बनाया गया है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन-स्तर में सुधार होगा और शहरी क्षेत्रों पर जनसंख्या का दबाव कम करने में भी मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा मेरी सरकार के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय है। पाकिस्तान मूल के आतंकवादियों द्वारा 13 दिसम्बर को हमारी संसद पर किए गए आक्रमण के बाद, अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अपनी सेना तैनात करने के लिए हम बाध्य हो गए। इस निर्णय से पड़ोसी विरोधी देश से निपटने में हमारे आत्म-संयम तथा दृढ़ निश्चय दोनों के प्रदर्शन से हमारा प्रयोजन सिद्ध हो गया है। गत वर्ष अक्टूबर में सावधानीपूर्वक विचार करने के पश्चात् सरकार ने निर्णय लिया कि सशस्त्र सेनाओं को उनके तैनाती स्थलों पर सामरिक नीति के अनुसार दोबारा तैनात किया जाए। ऐसा करते समय, किसी आपात स्थिति में दृढ़तापूर्वक जवाब देने की उनकी क्षमता से किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं किया गया है और न ही जम्मू-कश्मीर में चौकसी में कोई कमी की गई।

एक व्यापक नाभिकीय सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है। इसमें सामरिक परिसम्पत्तियों का अंतिम नियंत्रण नागरिक राजनीतिक कार्यपालिका के हाथों में रखा गया है। अग्नि-1 मिसाइल के सफल परीक्षण के लिए, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और कर्मचारियों पर देश को गर्व है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन की अन्य उपलब्धियों में स्वदेश में विकसित पिनाका, एरिया वेपन सिस्टम, और रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित सुपरसोनिक मिसाइल ब्रह्मोस शामिल है—जिसका सफल उड़ान-परीक्षण किया जा चुका है।

वर्ष 2002 में, सीमा-पार से आतंकवाद की लगातार हुई घटनाओं ने फिर से इस बात को रेखांकित किया है कि हमारी आंतरिक सुरक्षा को मुख्य खतरा बाहर से है। निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्याएं; सुरक्षा कार्मिकों के परिवार के सदस्यों को विशेष लक्ष्य के रूप में निशाना बनाना, तीर्थयात्रियों पर हमला—इन घटनाओं में पाक-समर्थित आतंकवादी हिंसा के जुनून के पीछे सोची समझी चाल थी, लेकिन यह चाल कामयाब नहीं हुई। गांधी नगर में अक्षरधाम मंदिर और जम्मू में रघुनाथ मंदिर पर हुए भड़काने वाले हमलों के बावजूद हमारी जनता ने शांति बनाए रखी। परंतु हमें अपने ऐसे शत्रु से सतर्क रहना चाहिए जो अपना भारत-विरोधी रवैया छोड़ने के इच्छुक नहीं हैं। सीमापार से आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान द्वारा दिए गए आश्वासन भी पूरे नहीं हुए। आतंकवादी संगठनों की अवसंरचना पाकिस्तान में बरकरार है तथा आतंकवादी संगठनों को पैसा भी बराबर दिया जा रहा है।

जम्मू-कश्मीर की नवनिर्वाचित सरकार द्वारा अपने राज्य में शांति, सामान्य स्थिति और आर्थिक विकास लाने के प्रयासों में

सहयोग के लिए केन्द्र सरकार पूर्णतः प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री ने 6,000 करोड़ रुपए से भी अधिक लागत की परियोजनाओं एवं स्कीमों की घोषणा की है। इसमें युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसरों के सृजन तथा आतंकवाद और सीमापार गोलाबारी से प्रभावित विस्थापितों को राहत देने पर बल देने के साथ-साथ, विकास एवं सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं को समाविष्ट किया गया है।

उत्तर-पूर्व में शांति बहाल करने के सरकार के संगठित प्रयास अब परिणाम देने लगे हैं। मैं नागालैंड की जनता को विशेष रूप से बधाई देता हूँ। शांति के प्रति उनकी तीव्र इच्छा ने इस दिशा में केन्द्र के प्रयासों को बल प्रदान किया है। शांति-वार्ता के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर, मैं बोडो समुदाय को भी बधाई देता हूँ। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विकास कार्य ने और त्ति पकड़ ली है। अव्यपगत केन्द्रीय पूल के जरिए कई वसंरचना संबंधी परियोजनाएं स्थापित की गई हैं। इस पूल के लिए अब तक 1,500 करोड़ रुपए से अधिक की राशि दी गई है। 50 सीटों वाले चार वायुयानों की उड़ानें प्रारंभ करके उत्तर-पूर्व में विमान यात्रा की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने की जनता की लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी की गई है।

पिछले तीन दशकों में, राज्यों को अपने पुलिस बलों को आधुनिक बनाने के लिए लगभग 550 करोड़ रुपए दिए गए। सके विपरीत, दो वर्ष पूर्व प्रारंभ की गई पुलिस आधुनिकीकरण योजना में अगले दस वर्षों तक हर वर्ष 1,000 करोड़ रुपए का आवधान है। जिन राज्य सरकारों ने इस निधि का समुचित उपयोग ही किया है, उनसे मेरा आग्रह है कि वे तुरंत सुधारात्मक उपाय लें। अप्रैल से 13 राज्यों में प्रायोगिक आधार पर बहुप्रयोजनीय राष्ट्रीय पहचान-पत्र परियोजना प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया है।

बंगलादेश से अवैध प्रवासियों की समस्या गंभीर हो गई है और इससे कई राज्य प्रभावित हुए हैं। उत्तर-पूर्व में सक्रिय द्रोही गुटों द्वारा बंगलादेश के सीमा क्षेत्र का इस्तेमाल किए जाने की रिपोर्ट मिली है। आई. एस. आई. भी बंगलादेश में सक्रिय है। इससे घुसपैठ का मुद्दा और भी गंभीर हो जाता है। इस समस्या को रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने हेतु सरकार प्रतिबद्ध है।

गुजरात में विधान सभा चुनावों ने लोकतंत्र को मजबूत किया है और इस राज्य के इतिहास के एक दुःखद अध्याय का अंत किया है। हमें यह सुनिश्चित करने का संकल्प करना चाहिए कि हमारे देश के किसी भी भाग में कभी भी कोई सांप्रदायिक हिंसा की पुनरावृत्ति न हो। सरकार पंथ - निरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध है।

मेरी सरकार ने बार-बार स्पष्ट किया है कि अयोध्या विवाद

को या तो दोनों समुदायों के मध्य वार्ता द्वारा सुलझाया जा सकता है। अथवा न्यायपालिका के निर्णय द्वारा, जिसे सभी संबंधितों को मानना होगा। न्यायपालिका को अपना कार्य तीव्रता से करके शीघ्र फैसला देना चाहिए। राजनीतिक दलों, धार्मिक नेताओं और विशिष्ट सामाजिक व्यक्तियों के लिए भी यह आवश्यक है कि वे परस्पर समझ-बूझ सद्भाव और अनुकूलता का माहौल तैयार करें।

आर्थिक विकास बढ़ाने के लिए सरकार की सुसंगत एवं समेकित कार्यनीति है। विश्वस्तर पर आयी मंदी के बावजूद, पिछला वर्ष काफी अच्छा रहा, क्योंकि भारत का स्थान तीव्र विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में बना रहा। इस वित्त वर्ष के प्रथम नौ महीनों में, भारत का निर्यात 20 प्रतिशत तक बढ़कर, 38 बिलियन अमरीकी डालर (1,81,300 करोड़ रुपए) तक पहुंच गया है। अर्थव्यवस्था में सापेक्ष गिरावट के बावजूद, इस वर्ष के पहले नौ महीनों में उत्पाद-शुल्क एवं सीमा-शुल्क से कुल राजस्व 15 प्रतिशत तक अधिक बढ़ा है। मुद्रास्फीति साधारण स्तर पर रही। हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 73 बिलियन अमरीकी डालर (3,48,429 करोड़ रुपए) पार कर चुका है। 14 राज्यों में गंभीर सूखे के बावजूद, खाद्य भंडार की स्थिति संतोषप्रद है और आवश्यक वस्तुओं की कीमतें काबू में हैं। सकल घरेलू उत्पाद के हाल के अनुमान में गिरावट लगभग पूरी तरह से कृषि उत्पाद में कमी आने की वजह से हुई। इससे एक बार फिर यह बात उभर कर सामने आई है कि सिंचाई में और कृषि उपज बढ़ाने वाले अन्य सभी घटकों में सार्वजनिक निवेश बढ़ाए जाने की आवश्यकता है ताकि हमारा कृषि क्षेत्र मानसून पर अत्यधिक निर्भर न रहे।

उप प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में सूखा संबंधी एक कार्य दल गठित किया गया है। राष्ट्रीय आपदा आकस्मिकता निधि के तहत अभी तक 1,000 करोड़ रुपए से अधिक की राशि राज्यों को दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त, राज्यों के आपदा राहत कोष में केन्द्र सरकार का योगदान 1,400 करोड़ रुपए से अधिक का है। संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना के तहत काम के बदले अनाज कार्यक्रम के जरिए राहत रोजगार के सृजन हेतु प्रभावित राज्यों को लगभग 5,000 करोड़ रुपए मूल्य का लगभग 50 लाख टन खाद्यान्न आबंटित किया जा चुका है।

बार-बार बड़े पैमाने पर मानवीय और आर्थिक क्षति करने वाली सूखे और बाढ़ जैसी समस्याओं का स्थायी हल ढूंढने के लिए राष्ट्र प्रयास करता रहा है। हमारी नदियों का एक ऐसा नेटवर्क बनाने के विचार पर कई दशकों से जनता का ध्यान रहा है, जिससे अधिशेष जल वाले नदी क्षेत्रों से कमी वाले क्षेत्रों में

जल भेजा जा सके। सरकार ने पर्यावरणीय सुरक्षा एवं विस्थापित लोगों के हितों से कोई समझौता न करते हुए, इस परियोजना की व्यावहारिक रूपरेखा तैयार करने के लिए एक कार्य-दल का गठन किया है। इस प्रयास से पेयजल, सिंचाई, ऊर्जा उत्पाद, अंतर्देशीय जल परिवहन एवं पर्यटन के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त होंगे। मैं इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि इस बृहद परियोजना के कारण स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण के लिए लघु कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता समाप्त नहीं हो जाती। यह दोनों परस्पर पूरक हैं।

राष्ट्रीय जल संसाधन परिषद ने एक नई राष्ट्रीय जल नीति अपनाई है। इस नीति में उपलब्ध धरातलीय व भू-जल के इष्टतम और सतत उपयोग के लिए समन्वित जल संसाधन विकास और प्रबंधन पर जोर दिया गया है। केन्द्र ने एक वर्ष में पूरी की जा सकने वाली बड़ी और मध्यम सिंचाई योजनाओं को पूरा करने के लिए एक फास्ट ट्रैक कार्यक्रम शुरू किया है। नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण के अनुमोदन के बाद बांध की ऊंचाई बढ़ाई गई। इससे सौराष्ट्र और उत्तरी गुजरात के शुष्क क्षेत्रों में पीने के पानी और सिंचाई की समस्या कम हुई है।

दिसम्बर में शुरू किए गए स्व-जलधारा कार्यक्रम से पूरे देश में ग्रामीण पेय जल आपूर्ति पहल कार्य को बढ़ावा मिला है। यह समुदाय तथा ग्राम पंचायतों द्वारा क्रियान्वित किया जाने वाला भागीदारी कार्यक्रम है। समुदाय पूंजीगत निवेश के लिए 10 प्रतिशत राशि का योगदान करता है तथा 90 प्रतिशत राशि केन्द्र वहन करता है। मुझे यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यक्रम के इस संदेश, 'दस कदम आप चलें, नब्बे कदम हम चलेंगे' से देश के सभी भागों में इस कार्यक्रम को अपार समर्थन मिला है। पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से जल विभाजक कार्यक्रमों के समन्वित विकास को बढ़ावा देने के लिए 'हरियाली' नामक एक नया कार्यक्रम शुरू किया गया है। ग्रामीण एवं शहरी भारत में पानी की गंभीर व बढ़ती हुई कमी को ध्यान में रखते हुए अब उपयुक्त समय आ गया है कि जल संरक्षण और कारगर जल उपयोग को एक जन-आंदोलन के रूप में शुरू किया जाए।

कृषि और सम्बद्ध क्रियाकलापों के लिए संस्थागत ऋण तीन वर्ष में लगभग 45,000 करोड़ रुपए से बढ़कर लगभग 75,000 करोड़ रुपए हो गया है। तीन वर्ष पूर्व प्रारंभ की गई किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम में तीव्र गति से प्रगति हुई है। सितम्बर, 2002 तक 2.7 करोड़ से अधिक कार्ड जारी किए गए। मार्च, 2004 तक इस स्कीम में सभी पात्र किसानों को शामिल कर

लिया जाएगा। राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना में काफी प्रगति हो रही है।

जिन राज्यों में गेहूं व चावल की अत्यधिक उपज हुई है, वहाँ के किसानों के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के साथ-साथ न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की नीति से, सरकारी एजेंसियों के पास गेहूं व चावल के भारी स्टॉक जमा हो गए हैं। अतः इस स्थिति को देखते हुए, सरकार खाद्यान्नों के निर्यात को बढ़ावा दे रही है। दीर्घावधि खाद्य व्यवस्था के लिए निर्यात संबंधी उच्चस्तरीय समिति द्वारा की गई व्यापक सिफारिशों की जांच की जा रही है। मौजूदा नीतियों की भी तत्काल समीक्षा की आवश्यकता है क्योंकि इनके कारण फसल विविधीकरण में बाधा आई है और खाद्य सप्लाय के स्वरूप को सुव्यवस्थित नहीं किया जा सका है। अत्यधिक खरीद किए बिना, किसानों को अलग-अलग फसलों के लिए सहायता सुनिश्चित करने के लिए भी ऐसा किया जाना जरूरी है।

खाद्य सुरक्षा की हमारी योजना में उर्वरक का महत्वपूर्ण स्थान है। यूरिया के लिए अप्रैल, 2003 से लागू की जाने वाली नई मूल्य निर्धारण नीति में और अधिक पारदर्शिता कारगरता तथा वित्तीय अनुशासन लाने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार उर्वरकों के विपणन और वितरण को नियंत्रण-मुक्त करने के लिए वचनबद्ध है और साथ ही वह यह भी सुनिश्चित करेगी कि अच्छी किस्म के प्रमुख उर्वरक पर्याप्त मात्रा में देश में उपलब्ध रहें ताकि वे सभी राज्यों में किसानों को उचित कीमतों पर मिल सकें।

हाल ही में, चीनी उद्योग के सामने गंभीर कठिनाइयां आई हैं, जिससे गन्ना उत्पाद किसानों को समय पर अदायगी करने में चीनी फैक्ट्रियों की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। चीनी मिलों की आर्थिक-क्षमता सुनिश्चित करने के साथ-साथ, गन्ना उत्पादकों के हितों की रक्षा करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। कृषि में विविधीकरण के लिए बागवानी को प्रमुख क्षेत्र के रूप में बढ़ावा देने के सतत प्रयास किए जा रहे हैं। कोल्ड स्टोरेज स्कीम अच्छे ढंग से कार्य कर रही है और इसमें 28 लाख टन की अतिरिक्त क्षमता सृजित की गई है। ग्रामीण गोदामों के निर्माण, नवीकरण तथा विस्तार की एक नई ग्रामीण भंडारण योजना आरंभ की गई है। इस योजना से, छोटे व सीमांत किसानों को अपनी फसल बाध्यतावश नहीं बेचनी पड़ेगी। एक नई राष्ट्रीय सहकारी नीति की घोषणा की गई है। राष्ट्रीय बीज नीति को अंतिम रूप दिया जा चुका है। पिछले वर्ष शुरू की गई एग्रीकल्चरल और एग्रीबिजनेस सेंटर स्कीम के तहत, भुगतान पर किसानों को विस्तार सेवाएं मुहैया कराने के लिए, बेरोजगार कृषि स्नातकों की सहायता ली जाती है। कृषि और बागवानी उत्पाद में

मूल्य-संवर्धन की आवश्यकता को स्वीकारते हुए, सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के विकास को उच्च प्राथमिकता दी है। विद्यमान असंख्य नियम-कानून होने के कारण इस क्षेत्र का विकास प्रभावित हुआ है, अतः इनके स्थान पर नया समन्वित खाद्य कानून और संबद्ध विनियम बनाने हेतु सुझाव देने के लिए मंत्रियों के एक समूह का गठन किया गया है।

सुदृढ़ सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से गरीबों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की प्रमुख प्रतिबद्धता बनी हुई है। अन्त्योदय अन्न योजना इस प्रतिबद्धता का ही एक प्रमाण है, जिसके अंतर्गत एक करोड़ निर्धनतम परिवार दो रुपए प्रति किलो की दर से गेहूं एवं तीन रुपए प्रति किलो की दर से चावल प्राप्त करने के हकदार हैं। केन्द्र आशा करता है कि राज्य सरकारें सार्वजनिक वितरण प्रणाली के सुचारू रूप से कार्य करने में आने वाली अन्य बाधाओं को शीघ्र दूर करेंगी।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आजादी के बाद की सबसे अधिक महत्वाकांक्षी ग्रामीण अवसंरचना परियोजना हैं। पिछले दो वर्षों के दौरान इसने राज्यों को 7,000 करोड़ रुपए से अधिक मंजूर किए हैं। जिससे लगभग 20,000 किलोमीटर सड़कों का निर्माण हो सका है। इस परियोजना के लिए अतिरिक्त संसाधन जुटाने तथा इसके क्रियान्वयन में तेजी लाने के नए उपाय करने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने अप्रैल में अखिल भारतीय पंचायत अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन में सर्वसम्मति से संकल्प पारित किया गया जिसमें केन्द्र सरकार से, संविधान में संशोधन करके पंचायती राज संस्थाओं को वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों का तीव्र और प्रभावी हस्तांतरण सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया। मैं चाहूंगा कि माननीय सदस्यगण पंचायत स्तर से प्रस्तुत इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव पर गहन रूप से विचार विमर्श करें।

राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना आजादी के बाद की भारत की गौरवमयी सफलताओं में से एक है। स्वतंत्रता के प्रथम 50 वर्षों के दौरान बनाए गए कुल 556 किलोमीटर के चार व छः लेन वाले राजमार्गों की तुलना में, आज, हम प्रतिदिन पांच किलोमीटर लम्बे विश्वस्तरीय राजमार्गों का निर्माण कर रहे हैं। सरकार, 1999-2007 के दौरान लगभग 15,000 किलोमीटर के विश्वस्तरीय राजमार्गों के निर्माण पर प्रतिदिन 20 करोड़ रुपए खर्च कर रही है। लगभग 6,000 किलोमीटर सड़कों वाली इस स्वर्णिम चौमार्गीय परियोजना का कार्य कई स्थानों पर अपनी नियत समयावधि से आगे चल रहा है। 18,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य के ठेके, जिसमें अधिकतर ठेकेदार भारतीय हैं, पहले ही दिए जा चुके हैं। यह परियोजना पहले ही 2.5 लाख निर्माण

कामगारों तथा 10,000 पर्यवेक्षकों के लिए दैनिक रोजगार का सृजन कर रही है। इसका प्रथम चरण पूरा होने पर यह रोजगार के 18 करोड़ श्रम दिवस सृजित कर चुकी होगी। भारत के सीमेंट और इस्पात उद्योग को भरपूर बढ़ावा देने के साथ-साथ, आशा है कि अकेले स्वर्णिम चौमार्गीय परियोजना से ईंधन व वाहन रख-रखाव लागतों पर 8,000 करोड़ रुपए की वार्षिक बचत होगी। मेरी राय में, इस परियोजना का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमने यह विश्वास प्राप्त कर लिया है तथा विश्व को दिखा दिया है कि भारत अब बड़ी परियोजनाओं के बारे में सोच सकता है तथा उन्हें रिकार्ड समय में पूरा भी कर सकता है।

सरकार ने, देश की प्रमुख परिवहन अवसंरचना, भारतीय रेल, को तीव्र विकास के मार्ग पर लाने के लिए विभिन्न प्रयास शुरू किए हैं। राष्ट्रीय रेल विकास योजना के नाम से गैर-बजटीय निवेश के क्षेत्र में नई पहल की गई है। इसमें अगले पांच वर्षों में 15,000 करोड़ रुपए के निवेश की परिकल्पना की गई है। जम्मू - कश्मीर में उधमपुर से बारामूला तक रेल लाइन के निर्माण के लिए 3,500 करोड़ रुपए से अधिक की लागत वाली एक प्रमुख परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि कश्मीर घाटी में पहली रेलगाड़ी 15 अगस्त, 2007 से पूर्व चलने लगे। लगभग 40,000 करोड़ रुपए की लागत वाली विचाराधीन कुल परियोजनाओं में से, अगले दस वर्षों के भीतर, सभी व्यवहार्य स्वीकृत रेल परियोजनाओं को पूरा करने की योजना भी बनाई जा रही है। अपनी मियाद पूरी कर चुकी परिसंपत्तियों के नवीकरण के लिए तथा सुरक्षा बढ़ाने संबंधी कार्यों के लिए 17,000 करोड़ रुपए का अव्यपगत विशेष रेल सुरक्षा कोष बनाया गया है।

पोत परिवहन और बंदरगाह विकास कार्य में सुदृढ़ता से सुधार हो रहा है। वर्ष 2002 में, प्रमुख बंदरगाहों की कुल कार्गो हैंडलिंग क्षमता पिछले वर्ष के यातायात की तुलना में अधिक रही। भारतीय बंदरगाहों पर अब क्षमता संबंधी बाध्यताएं नहीं रहीं जिनके कारण वहां भीड़ भाड़ हो जाती थी। जहाजों के टर्न अराउण्ड में भी अब अधिक समय नहीं लगता। निजी क्षेत्र से निवेश जुटाने के अपने सतत प्रयास में, सरकार ने कंटेनर टर्मिनल के संचालन के लिए तीन प्रमुख परियोजनाओं की पेशकश की है।

सरकार का इरादा जल्दी ही एक नई नागर विमानन नीति लाने का है, जिससे इस क्षेत्र में उदारता आएगी, व्यवस्थित प्रतिस्पर्धा प्रारंभ होगी, निवेश बढ़ेगा तथा हमारे विमानपत्तनों का आधुनिकीकरण होगा, ताकि यात्रियों को कम कीमत पर विश्वस्तरीय सेवाएं मुहैया कराई जा सकें।

भारत में दूरसंचार सेवाओं की उल्लेखनीय विकास दर, इस क्षेत्र का वृहद आकार, गुणवत्ता में अप्रत्याशित सुधार तथा शुल्क में भी इतनी ही अप्रत्याशित कमी, ये सब अभी पिछले कुछ वर्षों से देश की प्रमुख उपलब्धियाँ रही हैं। यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ सुधारों के लाभ आम आदमी तक सीधे पहुंचे हैं। कुछ वर्ष पहले तक, टेलीफोन लेने के लिए लोगों को इन्तजार करना पड़ता था। बाज, अनेक टेलीफोन कंपनियाँ लोगों को अपने टेलीफोन देने की होड़ में लगी हुई हैं। अप्रैल, 1999 और अक्टूबर, 2002 के बीच, 1.67 लाख गांवों में सार्वजनिक टेलीफोन मुहैया करा दिए गए हैं, फलस्वरूप, 85 प्रतिशत गांव इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। मोबाइल फोनों की संख्या, जो अप्रैल 1999 में 14 लाख थी, अब बढ़कर एक करोड़ से भी अधिक हो गई है। मोबाइल फोन कुछ वर्ष पहले एश्वर्य का प्रतीक था, जो अब आम आदमी के सशक्तिकरण का वाहनीय साधन बन गया है। दूरसंचार क्रांति ने देश में डाक सेवाओं को भी सशक्त बनाया है। भारत में डाकघर नेटवर्क, अपनी प्रमुख डाक सेवाओं को आधुनिक बनाने के साथ-साथ अनेक नई मूल्य - संवर्धित सेवाएं प्रदान करने की ओर भी अग्रसर हैं।

राष्ट्र के गौरव के रूप में उभर कर आया भारत का सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग, विश्व अर्थव्यवस्था में मंदी के बावजूद सही ढंग से कार्य कर रहा है। पिछले वर्ष के दौरान 7.8 बिलियन अमरीकी डालर के साफ्टवेयर का निर्यात किया गया। इस वर्ष 10 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंचने की आशा है। सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी सेवाओं में भी बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर सृजित होने लगे हैं। मैं, अपने सभी प्रतिभावान सूचना प्रौद्योगिकी व्यावसायियों तथा उद्यमियों को न केवल राष्ट्र के लिए धन सृजित करने बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय में भारत को प्रतिष्ठा दिलाने के लिए भी बधाई देता हूँ।

मीडिया और प्रसारण क्षेत्र में अनेक नई पहलें की गई हैं। उपभोक्ताओं को पर्याप्त विकल्प देने के लिए सरकार ने पे-चैनलों के लिए कंडीशनल एक्सेस सिस्टम लागू करने का निर्णय लिया है। शीघ्र ही यह चार महानगरों में लागू हो जाएगा। दूरदर्शन और आकाशवाणी को सशक्त किया जाएगा ताकि वे प्रसारण की सार्वजनिक सेवा के अपने दायित्व को प्रभावी ढंग से निभा सकें। शैक्षिक और विकासपरक संचार को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक और कैम्पस रेडियो स्टेशन स्थापित करने की अनुमति दी जाएगी। गहन परिचर्चा के बाद, समाचारों एवं समसामयिक विषयों से संबंधित भारतीय प्रिंट मीडिया में 26 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देने के लिए नीति में परिवर्तन किया

गया है। तदापि, इस संबंध में समुचित सुरक्षा उपाय किए गए हैं। भारत के बढ़ते हुए मनोरंजन क्षेत्र के हितों की सुरक्षा के लिए चोरी रोकने के प्रभावी उपाय किए जाएंगे।

विगत कुछ वर्षों में, देश में आवास निर्माण के क्षेत्र में एक क्रांति हुई है, जिसका श्रेय मिलेजुले रूप में, सरकार द्वारा की गई पहल और गृह निर्माण ऋण के ब्याज की निरंतर घटती दरों को जाता है। मुझे आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि जहाँ हुडको ने गृह निर्माण के लिए 1970 से 1998 तक लगभग 11,000 करोड़ रुपए स्वीकृत किए थे, गत चार वर्षों में उसके द्वारा स्वीकृत राशि इससे भी अधिक है। इसने, इस सरकार के बनने के बाद से अब तक, निर्धन और निम्न मध्यम वर्ग के लोगों के लिए 60 लाख से अधिक मकानों के निर्माण के लिए ऋण स्वीकृत किए हैं। अन्य सरकारी और गैर - सरकारी आवास वित्त कंपनियों ने भी इस दिशा में अच्छा योगदान दिया है। बाल्मीकी अम्बेडकर आवास योजना का लक्ष्य शहरी झोपड़पट्टी वालों के रहन सहन के स्तर में सुधार लाना है, जिसका खुले दिल से स्वागत किया गया है। शहर के स्तर पर आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए एक चुनौती कोष शीघ्र स्थापित किया जाएगा। सरकार ने रक्षा कार्मिकों के लिए 17,000 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत वाली पारिवारिक आवास निर्माण की एक वृहत् परियोजना को सिद्धांततः स्वीकृति दे दी है। जिसके प्रथम चरण के लिए 5,500 करोड़ रुपए लागत की मंजूरी दी जा चुकी है। दिल्ली मेट्रो के प्रथम चरण को सफलतापूर्वक आरंभ किए जाने से जनता में काफी गौरव और उत्साह की भावना जागृत हुई है। मैं उन सभी को बधाई देता हूँ जिन्होंने बड़ी सावधानी से इस योजना को कार्यान्वित किया। एक शहरी परिवहन नीति तथा अन्य शहरों में मेट्रो रेल के निर्माण की योजनाएं विचाराधीन हैं।

विकास प्रक्रिया में विद्युत प्रमुख प्रेरक शक्ति है। अच्छी बात यह है कि विद्युत क्षेत्र में सुधारों के धीरे-धीरे सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। अब तक, 18 राज्यों ने, त्वरित विद्युत विकास और सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। दिल्ली में विद्युत वितरण के निजीकरण से आपूर्ति में पहले ही सुधार आ चुका है। शुल्क निर्धारण व्यवस्था को युक्तिसंगत बनाने के लिए केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग का गठन किया गया है। साथ ही, 21 राज्यों में राज्य विद्युत विनियामक आयोगों का गठन किया गया है। व्यापक विद्युत विधेयक संसद के समक्ष अनुमोदनार्थ है। परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम भी अच्छी तरह चल रहा है। ऊर्जा सक्षमता ब्यूरो स्थापित किया जा चुका है। मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि सरकारी भवनों में 30

प्रतिशत ऊर्जा की बचत संबंधी योजना, राष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री कार्यालय में उचित रूप से तथा वास्तव में शुरू हो चुकी है।

अधिकतम आत्मनिर्भरता हमारी ऊर्जा सुरक्षा कार्यनीति का आधार है। अभी तक, नई अन्वेषण लाइसेंसिकरण नीति के अंतर्गत बोलियों के तीन दौर पूरे हो चुके हैं तथा 70 ब्लॉकों का कार्य सौंप दिया गया है, जिससे लगभग 3 बिलियन अमरीकी डालर (14,500 करोड़ रुपए) का निवेश हुआ है। चौथे दौरे की योजना तैयार है। यह नीति विस्तार और विशेषकर गहरा जल क्षेत्रों में विदोहन को बढ़ाने के अपने उद्देश्यों में सफल हुई है। इस नीति के तहत अनेक स्थानों पर बहुत सी बड़ी-बड़ी खोजों से सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं। पहली बार, कोयला संस्तर मीथेन एवं उसका उत्पादन करने के लिए आठ ब्लॉक दिए गए हैं। ओएनजीसी विदेश लिमिटेड ने वियतनाम अपतटीय गैस परियोजना से अपना पहला गैस उत्पादन शुरू कर दिया है। हाल ही में, कच्चे तेल पर रॉयल्टी की दर को पूर्व प्रभाव, अर्थात् अप्रैल, 1998 से बढ़ा दिया गया है। इससे तेल उत्पादक राज्यों को अतिरिक्त राजस्व प्राप्त हो सकेगा। पेट्रोलियम क्षेत्र में लागू मूल्य प्रणाली को अप्रैल 2002 से समाप्त कर दिया गया। गृहणियों के लिए भी अच्छी खबर है। पिछले चालीस वर्षों में दिए गए तीन करोड़ सैंतीस लाख गैस कनेक्शनों की तुलना में, पिछले चार वर्षों के दौरान तीन करोड़ तीस लाख गैस कनेक्शन दिए गए।

कोयला, भारत की मुख्य और गौण वाणिज्यिक ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रमुख स्रोत है। अभी तक विशिष्ट अंतिम उपयोग के लिए, आबद्ध खनन आधार पर 27 कोयला खनन खण्डों का कार्य 22 कंपनियों को सौंपा गया है। ऊर्जा पर संसदीय स्थायी समिति ने कोयला खनन राष्ट्रीयकरण (संशोधन) विधेयक, 2000 पर अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कर दी हैं। जिनमें आबद्ध अंतिम उपयोग के प्रतिबंध के बिना, निर्बाध कोयला खनन का कार्य निजी क्षेत्र को सौंपने का प्रावधान है।

पहली अप्रैल को भारत की अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था एक प्रमुख लक्ष्य को पार कर लेगी। हमारे सभी राज्य कर वसूली की एक समान प्रणाली अर्थात् मूल्यवर्धित कर प्रणाली अपना लेंगे। मूल्यवर्धित कर प्रणाली के लागू करने की प्रारंभिक अवधि के दौरान राज्यों को यह शंका है कि उन्हें इस प्रणाली से राजस्व की हानि होगी। लेकिन इस शंका का यह आश्वासन देकर निराकरण किया गया है कि यदि मूल्यवर्धित प्रणाली लागू करने से राज्यों

को राजस्व की कोई हानि होती है, तो भारत सरकार उसकी भरपाई करेगी।

सुव्यवस्थित पूंजी बाजारों और भली-भांति नियंत्रित वित्तीय संस्थाओं से तीव्र आर्थिक विकास के लिए लाभकारी निवेश जुटाने में मदद मिलती है। गत वर्ष निवेशकों को विश्वास बनाए रखने और संस्थाओं की वित्तीय स्थिति को बहाल करने के लिए सरकार ने कई सुधारात्मक और संवर्धनात्मक कदम उठाए हैं। इनमें वित्तीय परिसम्पत्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूति प्रवर्तन अधिनियम, 2002 को लागू करना शामिल है जिसमें लेनदारों को ऋण न लौटाने वालों की परिसम्पत्तियाँ प्राप्त करने की अनुमति दी गई है। छोटे निवेशकों के हितों को उचित संरक्षण देते हुए यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया का सफलतापूर्वक पुनर्गठन किया गया है। स्टॉक मार्किट के नियंत्रक सेबी को सुदृढ़ बनाया गया है। हाल में विभिन्न एजेंसियों द्वारा स्टॉक मार्किट "घोटाला" की जांच की गई जिससे खंडित दृष्टिकोण की सीमाबद्धता उजागर हुई है। ऐसी धोखाधड़ी की तहकीकात के लिए एक 'गंभीर घोटाला जांच कार्यालय' स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। निगमित लेखा परीक्षा और अभिशासन संबंधी नरेश चन्द्र समिति की रिपोर्ट का अध्ययन किया जा रहा है। राष्ट्र की अग्रणी वित्तीय संस्था भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के सम्मुख आ रही समस्याओं को हल करने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि इसका पुनर्गठन करके इसे एक नियमित निगमित अस्तित्व प्रदान किया जाए। भारतीय औद्योगिक विकास बैंक को निगमित करने के लिए एक विधेयक पेश किया गया है।

राजकोषीय समेकन की अनिवार्यता के कारण जरूरी हो जाता है कि सार्वजनिक धन का बेहतर ढंग से प्रबंधन किया जाए। ऐसा अधिक राजस्व की वसूली करके और अलाभकारी खर्च पर नियंत्रण करके ही किया जा सकता है। स्थायी, पारदर्शी और कारगर कर-प्रशासन पर ध्यान केन्द्रित करके, कर प्रणाली के पुनर्गठन के जरिए राजस्व में वृद्धि की जा सकेगी। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों के संबंध में केलकर समिति की रिपोर्टें ऐसा कर ढांचा तैयार करने में मार्गदर्शक हो सकती हैं। खर्च के बारे में केन्द्र और राज्यों, दोनों को, अपने राजस्व खर्च को युक्तिसंगत बनाने और अपनी सब्सिडी को बेहतर तरह से लक्षित करने की आवश्यकता है। हाल ही में गठित बारहवां वित्त आयोग, इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करेगा।

आर्थिक सुधारों की व्यापक नीति के एक भाग के रूप में विनिवेश प्रक्रिया को सतत गति प्राप्त हुई है। राज्य सरकारें भी इस नीति को अपना रही हैं। जिससे यह जाहिर है कि इस प्रक्रिया को व्यवहार में सर्वसम्मति मिलती है। विनिवेश से प्राप्त

लाभ से लोक ऋण का बोझ कम होता है, जिससे सामाजिक और संरचना संबंधी क्षेत्रों के लिए सरकारी संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं। वर्तमान वर्ष के दौरान, अभी तक के विनिवेश के तेरह मामलों में से, ग्यारह मामले घाटे में चल रही इकाइयों के थे। विनिवेश की प्रक्रियाओं ने पारदर्शिता, कार्यकुशलता, प्रशासनिक सरलता और सम्यक निर्णय लेने के उद्देश्यों के लिए मानदण्ड स्थापित किए हैं।

उदारीकरण के इस युग में भी संगठित और असंगठित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा देना सरकार की प्राथमिकता रहेगी। कर्मचारी भविष्य निधि से 3.7 करोड़ अंशदाता लाभांशित हो रहे हैं। इस योजना के अंतर्गत दावों को निपटाने में लगने वाले समय को 30 दिन से कम करके 2-3 दिन करने का एक नया कार्यक्रम शुरू किया गया है। राष्ट्रस्तर पर प्रत्येक श्रमिक को एक अलग सामाजिक सुरक्षा संख्या देने की तैयारी की जा रही है। राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी अब 50 रूपए प्रतिदिन कर दी गई है। दूसरे राष्ट्रीय श्रम आयोग ने एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसमें श्रमिकों से संबंधित अनेक मुद्दे शामिल हैं। इसकी विशिष्ट सिफारिशों पर विभिन्न स्टेक-होल्डर्स के साथ विचार-विमर्श किया जा रहा है। इन चर्चाओं के आधार पर, असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए एक व्यापक कानून को अंतिम रूप दिया जा रहा है, जिसे संसद के इस सत्र में प्रस्तुत किया जाएगा।

वस्त्र उद्योग विश्वव्यापी बाजार की चुनौतियों और धीमी गति से हो रहे आधुनिकीकरण से उत्पन्न समस्याओं से घिरता जा रहा है। अत्याधुनिक मशीनों से युक्त परिधान इकाइयों के लिए नौ अपैरल पार्क स्थापित करने की स्वीकृति दे दी गई है। देश में प्रमुख वस्त्र केन्द्रों में उपलब्ध सुविधाओं में सुधार लाने के लिए अनेक नई योजनाएं अनुमोदित की गई हैं। साथ ही परम्परागत हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्रों की समस्याओं को एक विशेष पैकेज के माफत बड़े पैमाने पर हल करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में हमारे बुनकरों और दस्तकारों को रोजी-रोटी मिलती है।

सरकार ने देश के लघु उद्योग क्षेत्र को मजबूत बनाने और इसे विश्वस्तर पर प्रतियोगी बनाने के लिए नई पहल की है। इसमें प्रौद्योगिकी को उन्नत बनाने, संपार्श्विक मुक्त ऋण प्रदान करने, भारतीय मानक संस्थान प्रमाणीकरण योजना के कार्य क्षेत्र का विस्तार करने, चरणबद्ध रूप से लघु उद्योग क्षेत्र में वस्तुओं के आरक्षण को समाप्त करने, और व्यावहारिक माहौल में लघु उद्योगों का संवर्धन करने की योजनाएं शामिल हैं। कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय खादी और ग्रामोद्योग आयोग प्रणाली के भीतर और बाहर शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए अनेक कार्यक्रम चला रहा है।

नई विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति, 2003 में एक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। ताकि ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभर सके। इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रबंधन के प्रति दृष्टिकोण, विद्यमान भौतिक और ज्ञान संबंधी संसाधनों के इष्टतम उपयोग, अभिनव प्रौद्योगिकियों के विकास बौद्धिक संपदा के सृजन और प्रबंधन तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और लाभों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने का उल्लेख किया गया है। वैज्ञानिक उत्कृष्टता के बढ़ावा और मान्यता देने के लिए 25 लाख रूपए का एक भारत विज्ञान पुरस्कार प्रारंभ किया गया है। जैव-प्रौद्योगिकी में भारत जिस तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है उससे हमें यह विश्वास हुआ है कि हम इसे स्वास्थ्य-देखभाल, खाद्य-सुरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण आदि की अनेक कठिन समस्याओं के किफायती समाधान खोजने और साथ ही संपदा और रोजगार सृजन के नए अवसर प्राप्त करने के लिए विकसित कर सकते हैं।

भारत का पहला मौसम विज्ञान संबंधी उपग्रह सफलतापूर्वक छोड़ा गया था। इनसेट-3 सीरीज में आगे छोड़े जाने वाले उपग्रहों से इनसेट प्रणाली की क्षमता में और बढ़ोत्तरी होगी। यह पहले ही एशिया की सबसे बड़ी स्वदेशी संचार उपग्रह प्रणाली है। शिक्षा के लिए एक अलग उपग्रह 'एडुसेट' भी विकसित किया जा रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने दूरस्थ क्षेत्रों में चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए दूर - चिकित्सा संयोजन का कार्य शुरू किया है। भारतीय दूर-संवेदी उपग्रह निरंतर हमारे संसाधनों के सर्वेक्षण और प्रबंधन के लिए बहुमूल्य आंकड़े देते आ रहे हैं। हाल ही में छः राज्यों के लिए भू-जल की संभावना वाले क्षेत्रों के मानचित्र जारी किए गए हैं। जिससे बोरवैल खोदने के लिए स्थलों का पता लगाने में मदद मिलेगी।

भारत के जैव संशोधन की प्रचुरता और विविधता हमारे लिए प्रकृति की एक प्रमुख देन है। शीतकालीन सत्र के दौरान पारित किया गया जैविक विविधता विधेयक, 2002 हमारे जैव-संसाधनों के संरक्षण और लगातार उपयोग की भारत की प्रतिबद्धता के संबंध में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लोगों की भागीदारी से एक महत्वकांक्षी वनरोपण कार्यक्रम शुरू किया गया है। जिसमें वन क्षेत्रों की सीमाओं पर बसे सभी 1.73 लाख गांवों में संयुक्त वन प्रबंधन समितियों की स्थापना की गई है। राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के कार्यक्षेत्र का काफी विस्तार किया गया है जिससे कि 17 राज्यों में प्रवाहित हो रही 29 नदियों के प्रदूषित क्षेत्रों के निकटवर्ती 155 कस्बों में कार्य किया जा सके। भारत ने पिछले वर्ष नई दिल्ली में जलवायु परिवर्तन पर यूनाइटेड नेशन्स फ्रेमवर्क

कन्वेंशन के पक्षकारों के आठवें सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया। दिल्ली घोषणा को सफलतापूर्वक अपनाए जाने से जलवायु परिवर्तनों के प्रति विकासशील देशों में जागरूकता बढ़ाने में सहायता मिली है। भारत, सतत विकास पर विश्व शिखर सम्मेलन में अपनाई गई कार्य योजना का स्वागत करता है। यह शिखर सम्मेलन पिछले वर्ष जोहानसबर्ग में हुआ था।

माननीय सदस्यों, हाल के महीनों में देश भर में हजारों बच्चों के साथ हुई मेरी बातचीत में मैंने पाया है कि उन सभी का यह सपना है कि वे अपने जीवन में कुछ बन पाएं और अपने देश भारत के लिए भी कुछ कर पाएं। यह हमारी सामूहिक जिम्मेवारी होनी चाहिए कि हम उनके लिए ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें वे अपने सपनों को साकार कर सकें। हम समेकित बाल विकास सेवाओं के माध्यम से बाल स्वास्थ्य और पोषाहार के बारे में, विश्व में सबसे बड़ा कार्यक्रम चला रहे हैं। आंगनवाड़ी कर्मचारियों द्वारा दी जा रही महत्वपूर्ण सेवाओं को देखते हुए, गत वर्ष अप्रैल से उन्हें दिए जाने वाले मानदेय को लगभग दोगुना कर दिया गया है। जनसांख्यिकीय दृष्टि से अत्यधिक पिछड़े 51 जिलों में राष्ट्रीय पोषाहार मिशन आरंभ किया गया है। एक सांविधिक निकाय, राष्ट्रीय बाल आयोग का भी गठन किया जाएगा जो बच्चों की समस्याओं के निवारण के लिए कार्य करेगा।

सभी को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने की राष्ट्रीय वचनबद्धता हमारे इस कदम से परिलक्षित होती है कि 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराना एक मौलिक अधिकार बना दिया गया है। इस संवैधानिक दायित्व के निर्वहन के लिए हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रम सर्व शिक्षा के अभियान को लगभग 5,500 करोड़ रुपए के परिव्यय से सफलतापूर्वक आरंभ किया गया है। प्रौढ़ साक्षरता योजनाएं अब देश के लगभग 98 प्रतिशत जिलों में कार्यान्वित की जा रही हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पचास वर्ष पूरे कर लिए हैं। इसका पुनर्गठन करके विश्वविद्यालय विकास आयोग बनाने का प्रस्ताव है। इसके लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम में शीघ्र ही आवश्यक संशोधन किए जाएंगे। आज मैं आई. आई. टी. प्रणाली को भी राष्ट्र की उत्कृष्ट सेवा के पचास वर्ष पूरे करने पर बधाई देना चाहता हूं। अपने स्नातकों की गुणवत्ता के लिए इसने विश्वभर में ख्याति प्राप्त की है। चौदह क्षेत्रीय इंजीनियरी कॉलेजों का दर्जा बढ़ाकर उन्हें राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान बना दिया गया है। अल्पसंख्यकों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। माननीय सदस्यों, यह सर्वाविदित है कि सभी स्तरों पर उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और संबंध में सुधार लाना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए अनेक

ठोस सुधार करने की आवश्यकता होगी। मैं चाहूंगा कि इस पर दोनों सदन चर्चा करें।

आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं के सशक्तिकरण का एक मुख्य पहलू है। महिला संघटक योजना की अवधारणा एक कार्यनीति के रूप में यह सुनिश्चित करने के लिए की गई कि बजटीय संसाधनों का कम से कम 30 प्रतिशत महिलाओं के लाभ के लिए खर्च किया जाए। मुझे इस संज्ञान से प्रसन्नता हो रही है कि 9वीं योजनावधि के दौरान सामाजिक क्षेत्र के मंत्रालयों में बजट आबंटन का लगभग 43 प्रतिशत वस्तुतः महिला विशिष्ट अथवा महिलाओं से संबद्ध योजनाओं पर खर्च किया गया है। इस प्रणाली को इस वर्ष और सुदृढ़ किया जाएगा। महिलाओं में स्व-सहायता समूह आंदोलन बहुत सफल सिद्ध हुआ है।

सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2002 की घोषणा कर दी है। इसका लक्ष्य जनसामान्य में अच्छे स्वास्थ्य की एक स्वीकार्य स्थिति प्राप्त करना है। खराब स्वास्थ्य स्थिति वाले क्षेत्रों में नई अवसंरचना बनाकर तथा विद्यमान संस्थानों की अवसंरचना में सुधार करके विकेन्द्रीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य देखरेख प्रणाली की उपलब्धता बढ़ाकर ऐसा किया जाएगा। भारतीय चिकित्सा पद्धति और होमियोपैथी संबंधी एक नई राष्ट्रीय नीति की भी घोषणा की गई है। मलेरिया, काला-अजार, डेंगू, अंधापन तथा कुष्ठ रोग की रोकथाम करने के हमारे प्रयास सही ढंग से जारी हैं। संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत 1998 में 20 मिलियन लोगों को उपलब्ध उपचार सुविधा अब बढ़कर 560 मिलियन लोगों के लिए उपलब्ध है। सरकार ने, देश भर में एक व्यापक राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के क्रियान्वयन में राज्यों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ अपनी सहभागिता बढ़ाई है। उदारीकरण के युग में सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि मूल औषधियां उचित मूल्यों पर आसानी से उपलब्ध हों। वह हमारे फार्मास्यूटिकल उद्योग को और सुदृढ़ करने के लिए व्यापक कदम उठाएगी। हाल के वर्षों में इस उद्योग ने कारगर निर्यात क्षमताएं तथा नई औषधियां विकसित करने में विश्व स्तर पर व्यापक प्रतिस्पर्धा शक्ति हासिल की है।

भारत के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की खराब स्थिति में सुधार करना आवश्यक है, जिससे कि बीमारियों, विशेषकर बच्चों और गरीबों में होने वाली बीमारियों को रोका जा सके। सरकार नागरिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी से शीघ्र ही एक व्यापक सफाई अभियान शुरू करेगी जिसे रेल, सरकारी भवनों, अस्पतालों तथा सार्वजनिक स्थानों में आरंभ किया जाएगा।

बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में जनसंख्या नियंत्रण के क्षेत्र में संतोषजनक प्रगति नहीं हुई। यह राष्ट्रीय चिंता का गंभीर विषय है। इन चार राज्य सरकारों के साथ निकट संपर्क से केन्द्र ने इस समस्या से निपटने के लिए अधिक ध्यान दिए जाने की योजना बनायी है। यह भी उतनी ही चिंता का विषय है कि देश के विभिन्न विकसित हिस्सों जैसे पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र और दिल्ली में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की जन्मदर का अनुपात अखिल भारतीय औसत से काफी कम है और यह पिछले कुछेक दशकों से घटता ही जा रहा है। संसद ने जन्म से पूर्व शिशु के लिंग का पता लगाने संबंध में दण्डात्मक प्रावधानों को और कड़ा किया है। तथापि, सरकारों तथा सिविल सोसायटी के लिए समय आ गया है कि वे बालिका भ्रूण हत्या और नवजात बच्चियों की हत्या जैसी बुराई के विरुद्ध एक सतत अभियान चलाए। चिंता का दूसरा क्षेत्र है कि उत्तर प्रदेश और कुछ राज्यों में पोलियो की बीमारी फिर से उभरी है। इसने भारत की 2001 तक पोलियो मुक्त बनाने के हमारे संकल्प को धक्का पहुंचाया है। 15 राज्यों में हैपेटाइटिस - बी के खतरनाक प्रसार को देखते हुए, बच्चों को आवश्यक टीके लगाने के लिए प्रायोगिक परियोजनाएं शुरू की गई हैं।

मेरी सरकार का निरंतर प्रयास रहा है कि कमजोर वर्गों तथा अल्पसंख्यकों को मुख्यधारा में शामिल किया जाए और सामाजिक न्याय को बढ़ावा दिया जाए। यह सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण उपाय है आर्थिक न्याय तथा रोजगारोन्मुखी शैक्षिक सहायता प्रदान करना। इस वर्ष 18 लाख से अधिक अनुसूचित जाति, पांच लाख से अधिक अनुसूचित जनजाति एवं 6 लाख से अधिक पिछड़े वर्ग के छात्रों को छात्रवृत्ति दी गई। इस वर्ष दसवीं कक्षा के बाद दी जाने वाली दो नई योग्यता-आधारित छात्रवृत्तियां प्रारंभ की गई हैं। इनमें से एक डा. बाबा साहेब अम्बेडकर के नाम पर है और दूसरी विकलांग छात्रों के लिए है। विभिन्न वित्तीय एवं विकास निगमों के लिए इस दायित्व की पूर्ति एक चुनौती है।

अनुसूचित जनजातियों के कल्याण एवं विकास पर और अधिक बल देने के लिए अनुसूचित क्षेत्र तथा अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन किया गया है ऐसे आयोग का गठन पहले 1960 में किया गया था। इसी तरह, पचास वर्षों के बाद, संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति सूची में त्वरित संशोधन किया गया है जिसमें 142 समुदायों को सूची में शामिल करना अथवा सूची में से निकाल देना भी शामिल है। अनुसूचित जनजातियों की आवश्यकताओं पर पूरा ध्यान देने के लिए राष्ट्रीय अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति आयोग को विभाजित करके एक पृथक राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग बनाने का प्रस्ताव है।

युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय ने राष्ट्रीय युवा नीति का नया

मसौदा तैयार किया है। एक राष्ट्रीय युवा आयोग बनाया गया है। 17वें राष्ट्रमंडल खेलों तथा 14वें एशियाई खेलों में अपने शानदार प्रदर्शन के लिए भारतीय खिलाड़ी बधाई के पात्र हैं। इस वर्ष के अंत में अफ्रीकी - एशियाई खेल आयोजित करने के निर्णय से देश में खेलों को और प्रोत्साहन मिलेगा। मैं अपने होनहार खिलाड़ियों तथा खेल संस्थाओं से अपील करता हूँ कि वे अगले वर्ष होने वाले ओलम्पिक खेलों की तैयारियों में पूरी तरह से जुट जाएं। माननीय सदस्यगण, आइए हम दक्षिण अफ्रीका में विश्व कप टूर्नामेंट खेल रही भारतीय क्रिकेट टीम को अपनी शुभकामनाएं दें।

चुनाव सुधारों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता गत वर्ष प्रारंभ किए गए ठोस विधिक उपायों से प्रदर्शित होती है। इसने दर्शाया कि संसद राजनीति के अपराधीकरण के प्रति जनता की चिन्ता की ओर ध्यान दे रही है। साथ ही राज्य सभा चुनावों में कथित धन-शक्ति प्रभाव को रोकने के लिए राज्य सभा के चुनावों के संबंध में खुली मतदान व्यवस्था शुरू किए जाने संबंधी लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) विधेयक, 2001 तथा चुनावों में भ्रष्टाचार तथा धन शक्ति को रोकने के लिए राजनीतिक पार्टियों को चुनाव फण्ड प्रदान करने संबंधी चुनाव एवं अन्य संबद्ध विधि (संशोधन) विधेयक, 2002 संसद के समक्ष विचाराधीन है।

न्यायपालिका में लम्बित मामलों को देरी से निपटान गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। इस स्थिति के निराकरण के लिए लगभग 500 करोड़ रुपए की राशि न्यायिक प्रशासन के लिए विशेष परियोजनाओं तथा उसमें सुधार लाने से संबंधित अनुदान के रूप में आबंटित की गई है। यह इस प्रयोजन के लिए किया गया अब तक का सबसे बड़ा निवेश है। कुछ राज्यों में फास्ट ट्रैक न्यायालय स्थापित किए जाने से मामले निपटाने में तेजी आई है जिला एवं अधीनस्थ न्यायालयों में न्यायाधीशों तथा मजिस्ट्रेटों के लगभग 2,000 रिक्त पदों को भरने का सम्मिलित अभियान शुरू किया गया है।

बीते वर्ष में भारतीय संस्कृति के गौरव को पुनर्जीवित करने हेतु बहुत से प्रयास किए गए हैं। प्रत्येक राज्य में कम से कम एक संस्कृति - सह - पर्यटन केन्द्र की स्थापना करने की नई संकल्पना उभरी है। संस्कृति व पर्यटन के बीच तालमेल स्थापित करने की आवश्यकता अनुभव की गयी जिसके तहत कुछ स्मारकों के समन्वित संरक्षण एवं विकास का कार्य शुरू किया गया है इन स्मारकों के आस-पास संपूर्ण मूलभूत विकास करने तथा जन सुविधाएं उपलब्ध कराने का कार्य व्यापक स्तर पर शुरू किया गया है। कुरुक्षेत्र, लालकिला, अजंता-एलोरा, हम्पी तथा हुमायूं

का मकबरा इसके कुछ उदाहरण हैं। आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गांधी के महान यात्रा पथों पर सांस्कृतिक पर्यटन फिर शुरू करने का प्रस्ताव है। पौराणिक सरस्वती नदी के पथ पर परिसरों के विकास का कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के 2600 वर्ष पूरे होने के स्मरणोत्सव के दौरान कई योजनाएं शुरू की गईं। कुरुक्षेत्र में "महाभारत उत्सव" अब प्रतिवर्ष आयोजित किया जाएगा। भारत का बहुत सा प्राचीन ज्ञान देशभर में फैली हुई संस्थाओं अथवा व्यक्तियों के पास बहुत बड़ी संख्या में उपलब्ध पाण्डुलिपियों में सुरक्षित है। एक राष्ट्रीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय में इन अमूल्य पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण, सूचीकरण, संरक्षण करने तथा इन्हें एकत्र करने के उद्देश्य से अभी हाल ही में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन प्रारंभ किया गया है।

मेरी सरकार, हमारे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हितों का संवर्धन करने तथा उनकी सुरक्षा के लिए भारत की विदेश नीति का उपयोग करने के अपने पुरजोर प्रयासों को जारी रखेगी। विश्व के सभी देशों के साथ अपने सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक संबंधों की शक्ति के आधार पर हम अपने राजनैतिक संबंधों को व्यापक बनाने, अपने आर्थिक सहयोग तंत्र को विस्तृत करने, सामरिक महत्व के रस्पर संबंधों को सुदृढ़ करने तथा नवीनतम प्रौद्योगिकियों के संबंध में सहयोग करने की ओर अग्रसर होंगे।

भारत ने हमेशा अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण, मैत्रीपूर्ण तथा सहयोगात्मक संबंध रखने का प्रयास किया है। दुर्भाग्यवश, पाकिस्तान ने लगातार हमारे प्रयासों का जवाब नफरत तथा हिंसा से, सीमा-पार से आतंकवाद की लगातार भारी मुहिम चलवाकर और उस मुहिम में सक्रिय सहयोग देकर दिया है। हाल ही के रहस्योदघाटनों से पता चलता है कि किस तरह संपूर्ण राजनयिक मर्यादा को दरकिनार करके दिल्ली स्थित राजनयिक मिशन का इस्तेमाल देश में आतंकवादी गुटों के लिए वित्तीय सहायता मुहैया कराने के लिए किया जा रहा है। हमें संबंधित राजनयिकों के विरुद्ध कार्रवाई करनी पड़ी, परन्तु हमने साथ ही यह भी कहा कि हम निष्कासित अधिकारियों के स्थान पर दूसरे अधिकारियों को स्वीकार करके अपने राजनयिक प्रतिनिधित्व के स्तर को कायम रखने के इच्छुक हैं। हमारे इस दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है कि सीमापार आतंकवाद समाप्त होने पर ही हम पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय वार्ता के लिए तैयार होंगे।

सार्क को इस क्षेत्र में आर्थिक एकीकरण तथा समुचित विकास का प्रेरक मानने की भारत की प्रतिबद्धता कायम है। काठमाण्डु घोषणापत्र में उल्लिखित आर्थिक एजेण्डा के महत्वपूर्ण

मुद्दों पर शीघ्रता से कार्रवाई करने के लिए हमने निरन्तर प्रयास किए हैं। हम निरन्तर यह कहते आ रहे हैं कि यदि इन मामलों में कोई सार्थक प्रगति हो सके तो हम अगले सार्क सम्मेलन में भाग लेंगे।

भारत भूटान के साथ अपने बहु-आयामी सहयोग को और बढ़ाना जारी रखेगा। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा पारंपरिक संबंधों ने बंगलादेश तथा म्यांमार के साथ हमारे संबंधों को दिशा दी है। हम म्यांमार में भारतीय सहयोग से विकास परियोजनाओं को भी क्रियान्वित कर रहे हैं। बंगलादेश के साथ आपसी विचार विमर्श के दौरान उठे कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक तथा सुरक्षा मामलों पर भी हम वार्ता कर रहे हैं। पिछले वर्ष सितम्बर में प्रधानमंत्री की मालदीव की यात्रा से उस देश के साथ हमारे सौहार्दपूर्ण संबंध और बढ़े हैं।

नेपाल राजनीतिक परिवर्तनों तथा माओवादी विद्रोह के मुश्किल दौर से गुजर रहा है। हमारा मानना है कि बहु-दलीय लोकतंत्र तथा संवैधानिक राजतंत्र नेपाल की स्थिरता सुरक्षा तथा विकास के लिए दो आवश्यक स्तंभ हैं। हम यह आशा करते हैं कि वर्तमान समस्याएं इसी व्यवस्था के भीतर शांतिपूर्ण तथा सर्वसम्मति के वातावरण में सुलझा ली जाएंगी। हमने श्रीलंका के साथ गहन राजनीतिक संवाद तथा लाभकारी आर्थिक सहयोग कायम रखा है। हम वहां की राजनीतिक समस्याओं के ऐसे हल के लिए किए जा रहे प्रयासों का समर्थन करते रहेंगे जो उस देश की भौगोलिक अखण्डता तथा जनसंख्या के सभी वर्गों की आकांक्षाओं को पूरा करे।

भारत व अफगानिस्तान की जनता के बीच मैत्री व सहयोग के घनिष्ठ और ऐतिहासिक संबंधों की परंपरा रही है। हम अफगानिस्तान के अंतरिम प्रशासन के प्राधिकार के विसतार और सुदृढ़ीकरण का स्वागत करते हैं और वहां की सरकार का पूरा समर्थन करते हैं। बहुत शीघ्र ही अफगानिस्तान के राष्ट्रपति भारत के राजकीय दौरे पर आ रहे हैं और हमें उनका स्वागत करने का सुअवसर प्राप्त होगा। भारत अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए व्यापक स्तर पर मानवीय, वित्तीय व परियोजनागत सहायता प्रदान करना जारी रखेगा।

हमने भारत और इस्लामिक गणराज्य ईरान की प्रगाढ़ मित्रता, वहां के राष्ट्रपति को इस वर्ष अपने गणतंत्र दिवस परेड समारोह में मुख्य अतिथि बनाकर, और अधिक सुदृढ़ की है। हम ईरान के साथ अपने संबंधों को बढ़ाना, सुदृढ़ करना तथा उन्हें विविध स्वरूप देना चाहते हैं। ऊर्जा व पारगमन के क्षेत्रों में इनका बहुत महत्व है।

चीन के साथ भारत के संबंध बढ़े हैं और उनमें विविधता आई है। व्यापारिक और आर्थिक सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। अन्य क्षेत्रों में विश्वास व सूझबूझ कायम करने के प्रयास जारी हैं। प्रधानमंत्री को इस वर्ष चीन की राजकीय यात्रा के लिए आमंत्रित किया गया है और उन्होंने यह आमंत्रण स्वीकार कर लिया है। हमने भूमण्डलीय भागीदारी के साझे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जापान के साथ द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करना जारी रखा है। कोरिया गणराज्य के साथ भारत का सहयोग लगातार बढ़ रहा है। हम कोरियाई प्रायद्वीप की घटनाओं पर लगातार नजर रखे हुए हैं। इन रिपोर्टों से गंभीर चिंता उत्पन्न हुई कि कोरिया लोकतांत्रिक जन गणराज्य ने पाकिस्तान से प्राप्त प्रौद्योगिकी की सहायता से परमाणु हथियार बनाने की योजना फिर से शुरू कर दी है। यह चिंता, सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों और उन दोहरे मानदंडों के संबंध में उत्पन्न हुई है जिन्हें बहुत से देशों ने संधि के दायित्वों और परमाणु प्रसार के मुद्दों के बारे में अपनाया है।

दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के पारंपरिक रूप से चले आ रहे गहरे संबंध हाल ही की द्विपक्षीय वार्ताओं और प्रधानमंत्री की कंबोडिया, लाओस व थाइलैंड की राजकीय यात्राओं से प्रतिबिंबित हुए हैं। जब नवंबर, 2002 में आसियान के साथ हमारी शिखर स्तर पर वार्ता हुई तब इस क्षेत्र के साथ हमारे संबंधों को एक नया आयाम मिला। नोम पेन्ह में भारत आसियान शिखर वार्ता में तय की गई आर्थिक योजनाओं के संबंध में हम अच्छी प्रगति कर रहे हैं।

हाल ही के राजनीतिक व आर्थिक घटनाक्रम के विचारों की समानता से मध्य एशिया के साथ भारत के गहरे संबंध और भी बढ़ गए हैं। भारत व मध्य एशियाई देशों की, आतंकवाद, उग्रवाद व मादक पदार्थों के अवैध व्यापार से निपटने के संबंध में समान सोच है, ये बुराइयां हमारे सभी पड़ोसी क्षेत्रों में फैली हुई हैं।

खाड़ी क्षेत्र का भारत के लिए बहुत महत्व है। यह क्षेत्र भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने का एक मुख्य स्रोत है और व्यापार एवं निवेश में प्रमुख आर्थिक भागीदार है। खाड़ी देशों के आर्थिक विकास में 3.5 मिलियन से भी अधिक भारतीय योगदान कर रहे हैं। पारस्परिक संपर्क से ये बहुआयामी और विविध स्वरूप वाले संबंध निरंतर मजबूत किए जा रहे हैं।

इराक से संबंधित दुखद स्थिति पर संपूर्ण विश्व की चिंता में हम भी शामिल हैं। उस क्षेत्र की शांति, स्थायित्व व सुरक्षा में हमारी गहरी रुचि है। हम आशा करते हैं कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के जरिए प्रकट की जाने वाली अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की बुद्धिमता से इस मामले का ऐसा शांतिपूर्ण समाधान कर लिया जाएगा जो मानवता के लिए हितकर होगा।

मेरी सरकार भारत व रूसी संघ के बीच सामरिक महत्व की भागीदारी को बहुत महत्व देती है जो लगातार राजनीतिक परामर्शों, बहुआयामी आर्थिक सहयोग तथा गहन रक्षा सहयोग से और भी बढ़ी है। राष्ट्रपति ब्लादीमीर पुतिन के पिछले वर्ष भारत की राजकीय यात्रा के समय आतंकवाद के विरुद्ध किए जाने वाले संघर्ष में सहयोग पर हमने समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए।

यूरोपीय देशों के साथ भारत के संबंध व्यापक व घनिष्ठ बने रहे। क्षेत्रीय व अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर नियमित रूप से विचारों का आदान-प्रदान करने से ये देश हमारे जायज सरोकारों को बेहतर रूप से समझ सके हैं और इससे हमारे द्विपक्षीय संबंधों को और भी प्रागढ़ बनाने में सहायता मिली है। कोपनहेगन में भारत-यूरोपीय संघ की शिखर वार्ता से यूरोपीय संघ के साथ हमारे संस्थागत सम्पर्क सुदृढ़ हुए हैं तथा इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में, भारत में आयोजित होने वाली अगली शिखर बैठक से ये संपर्क और भी बढ़ेंगे।

भारत और अमेरिका के बीच निरन्तर नए संबंध बन रहे हैं। दोनों देश यह मानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा व सामरिक महत्व के स्थापत्य के समक्ष दिनों-दिन बढ़ती जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए उनके द्विपक्षीय संबंधों में गुणात्मक परिवर्तन आना चाहिए। दोनों देश परस्पर हितों के बहुपक्षीय सामाजिक व आर्थिक मुद्दों पर द्विपक्षीय विचार विनिमय करने की दिशा में भी प्रयासरत हैं।

हमारे राजनयिक संबंधों में अफ्रीका का विशेष महत्व बना हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ में इस महाद्वीप के देशों की संख्या सबसे अधिक है और भारत के आर्थिक भागीदार के रूप में इसका महत्व भी बढ़ता जा रहा है।

लेटिन अमेरिका व कैरिबियाई देशों के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंध उल्लेखनीय रूप से बढ़े हैं। वर्ष 1977 से शुरू किए गए "फोकस एल ए सी" कार्यक्रम के परिणामस्वरूप भारत के सरकारी व गैर-सरकारी क्षेत्र का ध्यान इस क्षेत्र की ओर बढ़ा है।

जनवरी में आयोजित प्रथम प्रवासी भारतीय सम्मेलन समारोहों में विदेशों में बसे भारतीय समुदाय के साथ घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देने के सरकार के सतत प्रयासों को उजागर किया गया है। इस अवसर पर, हमने भारतीय मूल के दस ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सम्मानित किया जिन्होंने उन देशों में जहां वे रच-बस गए हैं ऐसी उपलब्धियां हासिल की हैं जिनसे हमारे

देश का गौरव बढ़ा है। सरकार ने कतिपय देशों में बसे भारतीय मूल के व्यक्तियों को दोहरी नागरिकता देने का भी निर्णय लिया है। इसके लिए आवश्यक कानून इस सत्र में लाया जाएगा।

माननीय सदस्यगण, यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि संसद ने अपने शीतकालीन सत्र में विधायी कार्य करने में अति उत्कृष्टता दर्शायी है। इस सत्र के दौरान, दोनों सदनों ने लगभग 42 विधेयक पारित किए और मैंने उन सभी पर अपनी सहमति प्रदान कर दी है। सरकार ने पिछले वर्ष अनेक विधेयक प्रस्तुत किए। इनमें से 93 विधेयक पारित किए जा चुके हैं, जिनमें महत्वपूर्ण संवैधानिक संशोधन भी शामिल हैं। पिछले 25 वर्षों में, पहली बार एक वर्ष में और 1947 के बाद से तीसरी बार, इतनी अधिक संख्या में विधेयक कार्यान्वित किए गए। रेल बजट और आम बजट से संबंधित वित्तीय कार्यसूची से अलावा, इस सत्र में बहुत से विधिक कार्य पूरे किए जाने हैं। मैं आशा करता हूँ कि संसद के बजट सत्र, और आगामी सभी सत्र, पिछले सत्र की तरह ही सार्थक सिद्ध होंगे।

मैं आपके प्रयासों की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिंद।

अपराह्न 1.58 बजे

[हिन्दी]

मंत्रियों का परिचय

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से सदन को मंत्रिपरिषद में हाल में शामिल किए गए अपने नए सहयोगियों का परिचय कराना चाहता हूँ।

1. श्री अरुण जेटली — विधि और न्याय मंत्री तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्री।
2. डॉ. सी. पी. ठाकुर — लघु उद्योग मंत्री तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास विभाग मंत्री।
3. श्री संघ प्रिय गौतम — कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)।

4. श्री छत्रपाल सिंह — रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री।
5. श्री दिलीप सिंह जूदेव — पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री।
6. श्री दिलीप कुमार मनसुखलाल गांधी — पोत परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री।
7. श्रीमती भावनाबेन देवराजभाई चीखलीया — संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय में राज्य मंत्री।
8. श्रीमती जसकौर मीणा — मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री।

अपराह्न 1.59 बजे

[अनुवाद]

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यो, हम लगभग दो माह के अंतराल के बाद आज मिल रहे हैं, मुझे सभा को, वर्तमान सदस्य श्री आनन्द मोहन बिश्वास तथा हमारे एक पूर्व साथी श्री एस. मुरुगैन के दुःखद निधन की सूचना देनी है।

अपराह्न 2.00 बजे

श्री आनन्द मोहन बिश्वास लोक सभा के वर्तमान सदस्य थे और उन्होंने पश्चिमी बंगाल के नवद्वीप संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। इससे पूर्व श्री बिश्वास अप्रैल से जून, 1971, 1972 से 1977 और 1983 से 1987 तक पश्चिमी बंगाल विधान सभा के सदस्य रहे। उन्होंने राज्य सरकार में वर्ष 1971 के दौरान वित्त राज्य मंत्री तथा 1972 से 1977 तक कृषि तथा सामुदायिक विकास एवं विधि राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया।

वह 1999 से 2000 तक अधीनस्थ विधान संबंधी समिति, 1999 से 2002 तक पेट्रोलियम और रसायन संबंधी समिति तथा 3 मई, 2000 से निधन के समय तक अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति के सदस्य रहे। वह 20 जनवरी, 2000 से अपने निधन तक गृह मंत्रालय की सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे। पेशे से वकील, श्री बिश्वास एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। वह पश्चिमी बंगाल में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के सर्वोच्च संगठन 'दलित समाज महाजोत' के अध्यक्ष थे। वह 1995 से 1998 तक राष्ट्रीय अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति आयोग के

सदस्य भी रहे। उन्होंने गरीबों और पददलितों के कल्याण के लिए कार्य किया।

श्री आनन्द मोहन बिश्वास का निधन 3 फरवरी 2003 को 64 वर्ष की आयु में नई दिल्ली से कोलकाता जा रही राजधानी एक्सप्रेस में हृदय गति रूक जाने के कारण हुआ।

श्री एस. मुरुगैन 1980 से 1984 तक सातवीं लोक सभा के सदस्य रहे और उन्होंने तमिलनाडु के तिरुपत्तूर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

श्री मुरुगैन 1980 से 1984 तक राजभाषा समिति तथा 1984 के दौरान गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति के सदस्य रहे।

इससे पूर्व, श्री मुरुगैन 1962 से 1976 तक तमिलनाडु विधान सभा के सदस्य रहे। वह 1963 से 1964 तथा 1965 से 1966 तक राज्य विधान सभा की क्रमशः प्राक्कलन समिति तथा विशेषाधिकार समिति के सदस्य भी रहे।

उन्होंने 1955 से 1964 तक तिरुवन्नामलाई नगर परिषद के पार्षद के रूप में भी कार्य किया।

पेशे से व्यवसायी श्री मुरुगैन, 1963 और 1965 के दौरान तमिलनाडु की क्रमशः खाद्य एवं विकास सलाहकार समिति तथा राज्य औद्योगिक विकास समिति के सदस्य रहे।

श्री मुरुगैन एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने समाज के दरिद्र एवं पद दलित वर्गों के उत्थान के लिए अनवरत कार्य किया।

श्री मुरुगैन का निधन 6 जनवरी, 2003 को तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडु में 83 वर्ष की आयु में हुआ।

हम अपने इन मित्रों के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। मैं अपनी ओर से तथा सभा की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ।

जैसा कि माननीय सदस्य जानते हैं, 1 फरवरी, 2003 को श्रीमती कल्पना चावला तथा छह अन्य अंतरिक्ष यात्री, अंतरिक्ष यान कोलंबिया में उस समय मारे गये जब यह यान फ्लोरिडा में उतरने से कुछ मिनट पूर्व अमरीका के टेक्सास राज्य के ऊपर विखंडित हो गया। अंतरिक्ष में 16 दिन के सफल अभियान के पश्चात पृथ्वी की ओर विजयी होकर लौटते हुए हरियाणा में जन्मी इस साहसी तथा दृढ़ निश्चयी महिला के उज्ज्वल भविष्य का दुःखद अंत हो गया।

श्रीमती कल्पना चावला, जिसका आसमान में उड़ने का सपना जे. आर. डी. टाटा से प्रेरित था, इस बात का जीवन्त

उदाहरण थी कि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा शक्ति और सतत परिश्रम से क्या कुछ हासिल नहीं कर सकता। अतः इस त्रासदीपूर्ण परिस्थितियों में उनकी असामयिक मृत्यु दिल को दहलाने वाली है।

हम श्रीमती कल्पना चावला और उनके साथी अंतरिक्ष यात्रियों की अंतरिक्ष यान कोलंबिया में हुई दुःखद तथा असामयिक मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं।

सभा इस त्रासदी पर अत्यधिक दुःख और शोक व्यक्त करती है।

अब सदस्यगण दिवंगत आत्माओं के सम्मान में थोड़ी देर मौन खड़े रहेंगे।

अपराहन 2.04 बजे

तत्पश्चात सदस्यगण थोड़ी देर के लिए मौन खड़े रहे।

अपराहन 2.05 बजे

[अनुवाद]

सभा पटल पर रखे गए पत्र

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा श्रम मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल) : महोदय, मैं, संविधान के अनुच्छेद 123(2) (क) के अंतर्गत राष्ट्रपति द्वारा 20 जनवरी, 2003 को प्रख्यापित सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अध्यादेश, 2003 (2003 का संख्या 1) (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूँ।

(ग्रंथालय में रखा गया। देखिए संख्या एल. टी. 6959/2003)

अध्यक्ष महोदय : अब सभा कल पूर्वाह्न ग्यारह बजे समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराहन 2.06 बजे

तत्पश्चात लोक सभा मंगलवार, 18 फरवरी, 2003/29 माघ, 1924 (शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

© 2003 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (दसवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित
और सनलाईट प्रिन्टर्स, दिल्ली-110006 द्वारा मुद्रित।
